द्वितीय अध्याय

'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' की वस्तु

द्वितीय अध्याय

"हानूश" और "कबीरा खड़ा बजार में' की वस्तु

"हानूश" भीष्म साहनी का इ.1977 में लिखित पहला रंग-नाटक है। भीष्मजी 1960 में चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग गये थे। वहाँ सड्कों पर घूमते-घूमते एक दिन आपने एक मीनारी घड़ी देखी, जिसके विषय में वहाँ विभिन्न जनश्रुतियाँ प्रसिद्ध थी। आपने लगभग पाच सौ वर्ष पूर्व बनी घड़ी बनानेवाले कलाकार हानूश तथा घड़ी बनाने के लिए राजा से मिले पुरस्कार के विषय में सुना और उस पर आधारित यह "हानूश" नाटक लिखा।

✻ हानूश का कथानक :-

हानूश नाटक तीन अंकों में विभाजित है।

प्रथम अंक :-

"हानूश" नाटक के प्रथम अंक में "हानूश" नामक कुफ्लसाज (ताला बनानेवाला कारीगर) की पत्नी कात्या और हानूश का बड़ा भाई जो पादरी है इनके बीच बातचीत से प्रारंभ होता है। हानूश की पत्नी कात्या हानूश की शिकायत बडे देवर पादरी से करती हुए कहती है, "मैंने आज तक आपके सामने मुँह नहीं खोला, लेकिन अब मैं मजबूर हो गई हूँ। इस तरह से यह घर नहीं चल सकता।"[1] कात्या के परिवार में उसका पति हानूश और बेटी यान्का है। हानूश के घडी बनाने की धुन के कारण उसका परिवार आर्थिक संकट में पड़ गया है। कात्या अपने पति से इतनी परेशान है कि वह अपने पति का हर समय अनादर और तिरस्कार करती है। हानूश का बड़ा भाई पादरी कात्या को समझाते हुए कहता है, "जरा सोचो, कात्या, अगर यह कामयाब हो जाए तो देश में बननेवाली यह पहिली घडी होगी।"[2] लेकिन कात्या उनकी बात मानने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं, पिछले दस बारा साल से चले इस सीलसीले से वह तंग आ गयी है। इसी बीच अच्छे भोजन, गर्म कपडें और दवा के बिना उसका

इकलौता बेटा मर चुका है। वह अपनी इसी वेदना को पादरी के सामने व्यक्त कर रही है। पादरी कात्या को हानूश का हौसला बढ़ाने की बात करता है। लेकिन कात्या उनका कोई उपदेश सुनना नहीं चाहती। हानूश भी परिवार की आर्थिक तंगी से परेशान है। कात्या इस परेशानी का कारण पादरी से बताती है, इतने में हानूश की बेटी यान्का आगे आती है और माँ की बाह पकडकर कहती है - ''क्या बात है माँ, बापू घड़ी बनाते हैं तो बनाने दो ना ! तुम रोकती क्यों हो ?''[3] इस तरह से वह अपने पिता को उचित ठहराती है, लेकिन वह घर की आर्थिक परेशानी से बेखबर लगती है। कात्या पादरी से यह भी कहती है कि दुनिया में इज्जत उसी की होती है जिसका घरवाला कमानेवाला हो। इस बातपर पादरी उसे जीवन की सच्चाई से अवगत कराते हुए कहता है, ''पैसेवाले कौन-से सुखी है, कात्या ? अगर पैसे से सुख मिलता हो तो राजा महाराजों जैसा सुखी ही दुनिया में कोई नहीं हो।''[4] लेकिन कात्या पादरी से बोलने में हार नहीं मानती। वह कह देती है कि घडी का इतना शौक था तो शादी ही नहीं करनी चाहिए थी। लेकिन शांत स्वभाव से पादरी कात्या को समझाते हुए कहता है कि पत्नी का विश्वास यदि हानूश को मिलता तो वह उसका हौसला और उत्साह दुगुना बढेगा।

कात्या को समझाने वाला पादरी कात्या को एक दु:ख की सूचना भी देता है। गिरजे के अधिकारायों ने हानूश को मिलनेवाली आर्थिक मदद अब बन्द कर दी गई है। बात सुनकर कात्या अधिक परेशान होती है। लेकिन कात्या की बेटी यान्का आशावादी है, वह कहती है, ''घडी एक दिन जरूर बनकर तैयार होगी।''[5] और वह पिता के काम में हाथ बटाने की बात करती है।

कात्या की मन:स्थिति और पदेशानी से बेखबर हानूश और उसका साथी लोहार घर में प्रवेश करता है। वे दोनों घड़ी के बारे में बातचित कर रहे है। हानूश लोहार से कहता है मैंने अब इसकी नब्ज पकड़ी है कि अब घडी बनाकर रहेंगी। फिर हानूश का ध्यान भाई पादरी की ओर जाता है। वह उसे आदाब करता है, फिर अपने घडी बनाने के काम मे जुड़ जाता है। सहसा घडी की टिक-टिक सुनाई देती है। यान्का भागकर घडी के पास जाती है और कात्या और पादरी भी हानूश की ओर एखाद कदम चले

जाते है। यान्का खुशी से नाचती है और अपनी माँ से कहती है - "देखा माँ! सभी कह रहे हैं बनेगी। तुम योंही बापू पर बिगड़ती रहती हो।"[6] पर थोडी देर के बाद घडी फिर रूक जाती है। हानूश घडी के किसी पुर्जे को छुता है फिर चलने लगती है। फिर वह लोहार को पेण्डुलम के छड़ को पीतल के तार के साथ बाँधने के लिए अपनी दुकान से तार लाने के लिए कहता है।

हानूश की ओर आगे बढ़कर पादरी कहता है, "तुम नए-नए चक्कर बनाने की बात सोच रहे हो हानूश, लेकिन इनके लिए पैसा कहाँ से आएगा? गिरजेवालों ने तो माली इमदाद देना बन्द कर दिया है।"[7] इस बात पर हानूश बेचैन होता है, उसे धक्का लगता है। मदद के बिना काम करना हानूश को मुश्किल सा लगता है। तब पादरी भाई हानूश को आदमी के मन में स्थिरता होनी चाहिए, यह कहता है और अपनी लाट पादरी बनने में आई रूकावटों को बताता है। उस समय मन में उठे विभिन्न विचारों को भी हानूश के सामने बताता है। लेकिन साथ ही साथ पादरी हानूश को यह भी कहता है, "उस दिन से मेरे मन में शांति आ गई है। --- और जिस दिन मेरे मन में शांति आई, उसी दिन से छोटा लाट पादरी बनने की मेरी सम्भावनाएँ भी बढ़ गई है।"[8]

हानूश जब पादी की बातें सुनता है तब कहता है आप ही बताओ अब मैं क्या करूं? तब पादरी भाई उसे कुफ़्लसाज होने के अहसास दिलाते है और वही काम करने को कहते हैं। साथ ही साथ वह पादरी कहता है - तुमने जिंदगी के तेरह साल इसमें खोए हैं। और मुख्य बात यह है कि तुम अपने पेशे पर लौट आओ। पादरी के इस तरह समझाने पर हानूश देर तक कुछ सोचता रहता है और कहता है कि कात्या और घर के बारे में अपने फर्ज को वह भूला नहीं है, पर इस काम को बीच में कैसे छोड सकता है? पादरी उसे फिर समझाता है कि - "मैं यह नहीं कहता कि सदा के लिए छोड़ दो। जब तुम्हारी माली हालत सुधर जाए तो बेशक अपना शौक पूरा करते रहना। तब घड़ी बने या नहीं बने, तुम्हें घर की चिन्ता तो नहीं होगी।"[9]

पादरी और हानूश के बातचित के दौरान लोहार तार लेकर लौटता है। वह हानूश को चिंतित मुद्रा में देखता है और चिंता का कारण भी पूछता है? पादरी हानूश को सोचने के लिए कहता है और चला जाता है। हानूश सारे हालात लोहार को बताकर कहता है कि गिरजेवालों को उसने जो मदद की दरख्वास्त की थी उसे नामंजूर किया है और वह अब आगे घडी के काम में हाथ नहीं लगाएगा। हानूश के मूँह से यह बात सुनकर लोहार आश्चर्य से दार्शनिक अन्दाज में कहता है, ''आगे बोल कि यह काम मेरे बस का नहीं, मैं इसे छोड़ रहा हूँ। यही ना ? पिछले तेरह बरस में हर तीसरे-चौथे महिने यह फिकरा मैं तेरे मुँह से सुन चुका हूँ कि इस काम से तुझे कुछ लेना-देना नहीं है।''[10] वह उसे यह भी कहता हैं, कि किसी दूसरी जगह दरख्वास्त कर देंगे लेकिन हानूश तू यह काम बन्द नहीं कर सकता। यह झिगमिग भी सदा चलती रहेगी। लोहार अपनी बातों से हानूश का मनोबल बढ़ाता है लेकिन कात्या, लोहार से कहती है, ''मैं कुछ नहीं चाहती, घरवालों के लिए दो जून रोटी चाहती हूँ।''[11] बुढा लोहार कात्या को समझाता है उसे भी इस काम से भारी लगाव है उसे यह पूरा विश्वास है कि हानूश जरूर एक दिन कामयाब होगा वह पूरे यकीन के साथ कहता है, ''फिर इसकी शोहरत का डंका दुनिया में बजेगा। घड़ी बजा करेगी तो सभी इसका नाम लेंगे कि हानूश की घड़ी बज रही है --- सभी की जुबान पर हानूश का नाम होगा।''[12] यह बात सुनकर कात्या लोहार पर बिगड़ती है, उसे कहती है कि तुमने यही सपना दिखा-दिखाकर इसका दिमाग खराब कर रखा है। तुम सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हो। लोहार काम के लिए हिसाबदान प्रोफेसर से, सौदागर से और नगरपालिकावालों से मदद माँगने की बात करता है। लेकिन हानूश, लोहार से कहता है यह भी मैंने सोचा था, लेकिन वे मदद से इन्कार करते हैं। गिरजेवालों की और नगरपालिकावालों की पटती नहीं।

बूढा लोहार हानूश की सफलता चाहता है। वह उसकी हिम्मत बढ़ाता है। उसके हर एक काम में साथ भाग-दौड़ करता है। हानूश का वह हौसला बढ़ाता है। इतने में हानूश का एक दोस्त ऐमिल अंदर आता है और कहता है, ''अरे हानूश, बाहर तो बड़ा शोर है और तुम लोग यहाँ मजेसे बातें कर रहे हो! तुम्हे कुछ मालूम नहीं कि बाहर क्या हो रहा है।''[13] और खुद ही शोर का कारण बताते हुए कहता

है कि कोई आदमी चोरी करके भाग गया है, पर सिपाहियों ने गलत आदमी को पकड़ लिया है और इस पर बाजार में शोर मच रहा है। यह बात सुनकर लोहार और हानूश हँसते हैं। यान्का की आँखों में आसू देखकर ऐमिल यान्का के आँसू का कारण पूछता है तो वह उसे गिरजेवालों ने वजीफा देने से इन्कार करने की बात कहती है। बापू अब घड़ी का काम बन्द कर देंगे। इतने में लगभग 22-23 वर्ष का फटेहाल, लेकिन प्रभावशाली युवक हानूश के घर में प्रवेश करता है और पनाह मांगता है। इस पर जेकब उसे घबराने का कारण पूछता है तो वह कहता है कि, तीन साल पहले मैंने एक पादरी के घर में सुअर चुराया था और इस कारण मुझे तीन साल तक कैद में भी रखा था। चार दिन पहले ही मैं कैदखाने से छुटा हूँ। वह यह भी बताता है कि वह गाँव में लोहार का काम करता था। और काम की तलाश में यहाँ आया है। पर हानूश उसे काम पर रखने से इन्कार करता है, लेकिन कात्या उसे काम पर रखना चाहती है। वह हानूश से कहती है, ''तुम इसे रख लो। तुम इसे ताले बनाना सिखा दो इसे मै ताले बनाने के काम पर लगा लूँगी। यह बनाएगा और मैं बेच आया करूँगी। तुम इसे रख लो।''[14] इसके रखने से घर का खर्चा चलेगा और हानूश को घड़ी बनाने का भी काम करना संभव होगा। यह कात्या की बात सुनकर हानूश हैरान रह जाता है और कात्या से कहता है कि ''क्या तुम सचमुच मेरे साथ बहुत दुखी रही हो कात्या ?''[15] इस बात पर कात्या हानूश से कहती है कि मैं जानती हूँ कि तुम घड़ी बनाने का काम नहीं छोडोगे। तुम अब आजाद हो गये हो। वफीजे का इन्तजाम करो और घड़ी बनाने का काम जारी रखो। मैं तुमसे कभी कुछ नहीं कहूँगी और कात्या आँसू पोंछते हुए पिछले कमरे की ओर चली जाती है। यहाँ नाटक का प्रथम अंक समाप्त होता है।

द्वितीय अंक :-

पहला दृश्य :-

नगरपालिका हॉल के कमरे में पालिका सदस्य आ रहे है। इनमें हुसाक, जान, शेवचेक, जार्ज आदि सदस्य जमा हुए हैं। वे सारे सदस्य एक बात पर बहस कर रहें है कि हानूश द्वारा बनाई गयी घड़ी किधर लगाई जानी है। इस दौरान जान कहता है कि पहले बादशाह सलामत से मंजूरी मिलनी

चाहिए। आजकल लाट पादरी की चलती है, बादशाह सलामत लाट पादरी की ही सुनते है। बादशाह की इजाजत अगर मिल जाए तो उनके स्वागत में इस बीच घड़ी यहाँ लागाई जा सकती है। हुसास सभी को इस बात की ओर ध्यान देने के लिए कहता है कि बादशाह सलामत एक महिने के बाद नगरपालिका में आ रहे हैं। तो शेवचेक कहता है कि उस दिन यहाँ बहुत सी बातों का फैसला हो जाएगा। जब शेवचेक बड़े वजीर के घर जाता है तब बड़े वजीर ने उनके नुमाइन्दों को खड़े-खड़े ही विदा कर दिया। उन्हे बैठने तक नहीं कहा। इन घटनाओं से बादशाह सलामत का नगरपालिका की ओर रूख अच्छा नहीं है। इसका समर्थन करते हुए शेवचेक कहता है, ''सामन्तों की लाट पादरी के साथ फिर से साज़-बाज़ चलने लगी है। वे नहीं चाहते कि दरबार में हम लोगों को नुमाइन्दगी मिले। और वही लोग बादशाह सलामत पर दबाव डालकर अपनी बात मनवा लेंगे।''[16]

जान शेवचेक के बातों से सहमति जताते हुए कहता है कि दरबार में हमारी भी सदस्यता होनी चाहिए। बादशाह सलामत तो लाट-पादरी के हाथ की कठपुतली बने हुए है। इस बात पर जॉर्ज कहता है कि पुल के चौकीवालों ने उसे यह बताया कि कल रात पाँच बड़े सामन्त शहर में आये थे। वे लाट पादरी से मिले लेकिन बादशहा सलामत से नहीं। और सुबह पौ फटने से पहले ही देहात की ओर निकल गये। इस बात पर चिंतित स्वर में शेवचेक कहता है कि अगर सामन्तो और लाटपादरी की साज-बाज चलती रही तो ये हम सौदागरों-सनअतकारों को कहीं का नहीं छोड़ेंगे। इसलिए सबसे जरूरी है कि हम नगरपालिका पर घड़ी लगाकर बादशाह सलामत का स्वागत करें, उनका मन जित ले और दरबार में अपनी नुमाइन्दगी की माँग पेश करें। इससे सामन्तों और लाट-पादरी को पता चलेगा की उनसे टक्कर लेनेवाले लोग मौजूद है। इससे तो बादशाह सलामत के हाथ मजबूत होंगे।

बादशाह के दरबार में कितनी नुमाइन्दगी माँगे ? इस बात पर सभी नगरपालिका सदस्यों की बातचीत चल रही थी, इतने पर वहाँ टाबर बूरी खबर लेके आता है। वह कहता है कि, ''फैसला हुआ है कि हानूश की घड़ी बड़े गिरजे पर लगाई जाएगी।''[17] यह बात सुनकर चारो सौदागर एक-दूसरे

की ओर देखते हैं, उत्तेजित हो उठते हैं। उनका मत है कि घड़ी नगरपालिका की मदद से बनी हैं, गिरजे पर कैसे लगा दी जायेगी ? गिरिजेवालों ने तो हानूश को मदद देने से इन्कार किया था। अब घड़ी तैयार हो गई तो वे इसके मालिक बन बैठे हैं। इस बात पर जार्ज कहता है कि घड़ी नगरपालिका की अनुदान से बनी है। इसलिए नगरपालिका जहाँ चाहेगी, वही उसे लगाया जाएगा। घड़ी बनाना इन्सान का काम नहीं, शैतान का काम है कहनेवाले लाट पादरी भी घड़ी बनने पर गिरजेपर लगाने की बात करते है। शेवचेक भी कहता है कि यदि लाट पादरी की यह बात हमने मानी तो उनके हौसले और ज्यादा बढ़ जाएँगे। जो पैसे देता है, चीज उसी की होती है, यह व्यापार की बात है।

सभी सदस्यों की बात यही थी कि घड़ी गिरजे की बजाय नगरपालिका पर लगे। यह बात सुनकर जान कहता है कि जब तक घड़ी बनी नहीं थी तब तक किसी के दिल में यह ख्याल भी नहीं था कि घड़ी कहाँ लगानी चाहिए। अब सभी उसे हथियाने के लिए लपक रहे हैं। टाबर भी कहता है कि देश में बनाई जानेवाली पहली घड़ी भगवान के घर ही शोभा देती है। क्योंकि यह घड़ी आसानी से अब हमें नहीं मिल सकेगी। इसलिए अब हानूश से विनती करके दूसरी घड़ी बनवाने कह देते हैं और नगरपालिका पर लगवा लेंगे। इस बात के दौरान जार्ज कहता है कि हम बादशाह सलामत से यह कह दे की घड़ी गिरजे या नगरपालिका की बजाय सलामत के महल पर लगा लेनी चाहिए। ताकि बादशाह सलामत को और भी जगह है जहाँ घड़ी लगाई जा सकती है इसका पता चलेगा।

नगरपालिका हॉल में उपस्थित सभी घड़ी को अपने फायदे की दृष्टि से देखते हैं। कोई घड़ी का युरोप व्यापार करने की सोचता है, तो कोई घड़ीसाजों की जमात बनाने की सोचता है। नगरपालिका के जरिए चुंगी वगैरा की सहूलियते कैसी मिल जायेगी यहाँ तक कोई सदस्य सोचता है। सभी सदस्यों की बातचित सुनकर जार्ज कहता है कि, "तुम एक बात भूल रहे हो कि हानूश एक पादरी का छोटा भाई है। हानूश उसी रास्ते जाएगा जिस रास्ते उसका भाई उसे कहेगा। और हानूश पर उसने बड़े एहसान किए हैं।"[18] जब हानूश को कमजोर कहने की बात चलती है तो टाबर कहता है कि यदि हानूश

कमजोर या पिलपिला इन्सान होता तो अपनी जान जोखिम में डालकर सुअर चुरानेवाले लडके को अपनी घर पनाह नहीं देता। हँसी-मजाक में यह भी बात होती है कि हानूश की बेटी के साथ टाबर के बेटे की शादी करवा डालो। ताकि हानूश अपनी बेटी और दामाद की बात सुनेगा न कि गिरजेवालों की। आखिर सभी उपस्थित सदस्यों में एक राय होती है कि घड़ी नगरपालिका पर ही लगा ली जाए। यदि बादशाह सलामत नाराज होंगे और यहाँ तशरीफ लायेंगे तो सैकडो दस्तगारों-सनअतकारों को इकट्ठा करेंगे और उनका स्वागत करेंगे। साथ ही साथ यह भी तय होता है कि बादशहा के दरबार में नुमाइन्दगी माँगने की दरख्वास्त भी बादशाह सलामत को दी जाये। सभी सदस्य, व्यापारी लोग मिटींग के लिए आते है हुसाक प्रधान की कुर्सी पर बैठता है और कारवाई शुरू होती है।

द्वितीय अंक

दूसरा दृश्य :-

यान्का और जेकब हानूश के यश से प्रसन्न है। वे दोनो एक दूसरे से घडी के बारे में बातें कर रहे है। हानूश की पत्नी खुशी के मारे कभी हँसती है तो कभी रोती है। सारे मुहल्ले का वातावरण आनंदित है। हर कोई हानूश को बधाई दे रहा है। लोग उसे भेट स्वरूप फूलों के गुलदस्ते दे रहे है। कोई उसे शुभ-कामनाएँ दे रहा है। गली में चारों ओर का माहौल प्रसन्नचित है। हानूश की बेटी यान्का, जेकब से कहती है कि बापू ने यह घडी उसके लिए बनाई है। गली में हर कोई हानूश की सुरत देखने के लिए उत्सुक है। कोई हानूश को हाथ जोडकर, तो कई तालियाँ बजाकर उसे अभिवादन करता है। हर कोई उससे लम्बी उम्र की या मुबारक की बात कर रहा है। हानूश जेकब से पूछता है कि घड़ी नगरपालिका पर लगा दी गई न ? और हममे से एक आदमी का वहाँ रहना जरूरी है। जेकब कहता है कि औजारों का बक्सा लेने आया हूँ ताकि उसे भी घड़ी के पास ही रखा जा सके और वह औजारों का थैला उठाकर बाहर चला जाता है।

हानूश समारोह में जाने की पूरी तैयारी में लगा है। वह हुसाक से चोगा माँगकर लाता है और कात्या उसकी सीवन ठीक कर देती है। ताकि वह हानूश को ठीक बैठ सके। यान्का पादरी चाचा से जूते माँगकर लाती है और हानूश को देती है। कपडे और जूतों को पहनकर हानूश कहता है कि ऐसे कपडों को पहनकर पैदल चलना तो बड़ा कठिन है। यह पोशाक तो घोडागाडी के लिए बनी है। हम भी मुहल्ले में से घोडागाड़ी में बैठकर निकलते हैं। जब हानूश कात्या से पूँछता है कि तुम सारा वक्त प्रार्थना क्यों करती रहती हो ? तब कात्या कहती है कि मैं दिल से यही चाहती थी कि तुम्हें कामयाबी मिले, भगवान से भी यही माँगती थी। हानूश कात्या की बात सुनकर धीमी आवाज में कहता है, "मेरी इस कामयाबी के पीछे तुम्हारी कुर्बानी है। हर काम के पीछे किसी औरत की प्रार्थना होती है, उसकी कुर्बानी होती है, उसकी प्रेरणा होती हैं।"[19] इतने में घड़ी शुरू होने की आवाज आती है। और बाहर से विविध आवाजें भी आने लगती है। कात्या और हानूश दोनो रोमांचित हो उठते है, मुस्कराने लगते हैं। महाराज के आने के पहले घड़ी शुरू हुई इसका आनंद दोनों के चेहरे पर छा जाता है। घड़ी की आवाज सुनकर लोग हानूश और उसकी घड़ी इसी विषय पर बातचित कर रहें हैं। घड़ी की आवाज सुनकर लोग खुशी के मारे नाचने लगते हैं। हानेश की तारीफ करते हैं। सभी लोगों की भीड़ नगरपालिका की ओर बढ़ने लगती है। यान्का की आँखों में खुशी के आँसू निकल आते है। यान्का बाहर से भागकर घर चली आती है, और अपने माँ-बाप से पूछती है कि क्या घडी की आवाज सुनी?

हानूश की सफलतापर खुश हुए कुफ्लसाज लोग बीयर के कनस्तर हानूश के घर भेजते हैं। नगरपालिका की ओर से भी कुछ मिलता है। हानूश कनस्तर लेकर आनेवाले लोगों को बीयर पिलाता है। बीयर पिनेवाले लोग हानूश को दुआएँ देते हुए चले जाते हैं। हानूश और कात्या के बीच यान्का की शादी की बात चल रही है। हानूश कहता है कि यान्का के लिए जेकब अच्छा रहेगा। तो कात्या कहती है वह भी घडी बनाएगा और मेरी बेटी को भूखा मारेगा। दोनों एक दूसरे को ताना मारते है। इतने में ऐमिल घर आता है और हानूश से कहता है तुम अभी तक तैयार नहीं हुए? हानूश उसे कहता है कि तैयार तो हूँ पर मुझे दरबार के अदब-कायदे कुछ भी मालूम नहीं। हानूश की बात सुनकर ऐमिल उसे

सबकुछ समझाता है और कहता है कि तुम जनम के दरबारी थोडेही हो। तुम्हें तो महाराज घड़ी के बारे में विभिन्न प्रश्न पूछेंगे इसका सही ढंग से जवाब देना है। तुम्हें तो महाराज की तारीफ करनी होगी क्योंकि सभी राजा लोग तारीफ के भूँखें होते है। तुमने घड़ी क्यों बनाई है? इसका जवाब देते समय "तुम कहना, हुजूर की खुशी के लिए, हुजूर के राज्य की शान बढ़ाने के लिए, राजधानी की रौनक बढ़ाने के लिए।"[20] हानूश तुम्हें इस बात का ख्याल रहे कि तुम्हें न नगरपालिका के हक में कुछ कहना है न गिरजेवालों के खिलाफ। इन दोनों के झगडे में हमें नहीं पड़ना चाहिए। इतने में हानूश के पादरी भाई आते हैं। पादरी भाई कुछ थके-थके से है। हानूश उन्हें पूछता है कि क्या बात है? तब पादरी भाई कहते हैं, "बात क्या होगी ? यही रोज के झगड़े। जब से तुमने घड़ी बनाई है पादरियों के बीच बहसें चल पड़ी हैं, कोई कुछ कहता है कोई कुछ। तरह-तरह की बातें चल रही है। तुमने घड़ी तो बनाई है, मगर माफ करना, इन नए-नए आविष्कारों में यह बहुत बड़ी बुराई है कि इनसे मन की अशान्ति बढ़ती है। झगड़े उठ खड़े हुए हैं। तुमने घड़ी नहीं बनाई होती तो आज के दिन इस वक्त लोग गिरजे में बैठे होते । आज गिरजे में कुछेक बुढों को छोड़कर कोई आया ही नहीं।"[21] हानूश और पादरी के बातचीत के दरम्यान यान्का कहती है घोड़ागाड़ी यहाँ आकर रूक गई है। एक अधिकारी आता है और हानूश को मुबारक करता है। नगरपालिका की तरफ से तुम्हें लिवाने आया हूँ। यह बात हानूश से कहता है। ऐमिल हानूश को सोच-समझकर जवाब देने की बात करता है तो पादरी न घबराने की बात करता है। हानूश घर से समारोह-स्थल जाने के लिए निकलता है।

द्वितीय अंक

तिसरा दृश्य :-

नगरपालिका के सभा कक्ष में सभी सदस्य एक-एक करके प्रवेश कर रहे हैं। चारो ओर समारोह का माहौल है। नगरपालिका का अध्यक्ष हुसाक, उपाध्यक्ष जार्ज से तैयारियों के बारे में पूछता है। वहाँ पर जान, टाबर, शेवचेक आदि नगरपालिका के सदस्य मौजूद है। घोड़ा-गाडी में बैठकर हानूश भी वहाँ पहुँचता है। लोगों की भीड उसके स्वागत में तालियाँ बजाती है। नगरपालिका सदस्यों

ने शहर के अनेक दस्तकारों को बादशाह सलामत आनेवाले मार्ग पर पंक्तिबध्द खड़ा किया है। हुसाक ने सभी को इस बात की जानकारी दी है कि महाराज पहली बार यहाँ आ रहे हैं इसलिए ऐसी कोई बात न हो जिसके कारण महाराज नाराज हो। वह कहता है कि सबसे पहले महाराज का स्वागत मैं करूंगा। इसके बाद महसूल चुंगी का मसला टाबर पेश करेगा। शेवचेक हम दस्तकारों की नुमाइन्दगी की दरख्वास्त महाराज के सम्मुख पेश करेगा और अन्त में हानूश कुफ्लसाज को पेश किया जायेगा। दरबार खत्म होने पर जान महाराज को नीचे तक छोड़ने जायेंगे। सभी कामों का नियोजन हुसाक सभी सदस्यों को समझाता है। कुछ ही देर बाद महाराज प्रस्थान करते हैं। उनके पीछे-पीछे मन्त्री, लाट पादरी, दो-एक अंगरक्षक आदि समारोह हॉल में प्रवेश करते हैं।

समारोह हॉल में प्रवेश करते ही महाराज पूछते हैं किधर है वह आदमी जिसने घड़ी बनाई है? हानूश आगे बढ़कर आदाब बजा लाता है। महाराज उसे विभिन्न प्रश्न पूछते हैं। महाराज के एक प्रश्न पर उत्तर देते हुए हानूश कहता है, यहाँ युनिवर्सिटी में एक बड़े हिसाबदान है, उन्होंने मुझे बहुत कुछ सिखाया है। शहर के लोहारों ने सामान बना-बनाकर मेरी बड़ी मदद की है। नगरपालिकावालों ने बड़ी मदद की है। नगरपालिका की मदद की बात सुनकर महाराज क्रोधित होते है और हानूश से पूछते हैं कि तुमने हमसे कोई मदद क्यों नहीं माँगी ? फिर पूछते हैं कि ऐसी ही दूसरी घड़ी तुम कितने दिन में बना सकते हो? वह घड़ी कैसी होगी ? महाराज की बात सुनकर हानूश घरबरासा जाता है। वह कहता है दो-एक साल में बन ही सकती है और इससे बेहतर भी हो सकती है। महाराज नगरपालिका के अध्यक्ष हुसाक से पूछते हैं कि दूसरी घड़ी बनवाओगे तो वह कहाँ पर लगेगी? इस बात पर हुसाक कहता है, जहाँ आप (महाराज) फरमाएँगे हुजूर।

महाराज और हुसाक के बातचीत के दौरान टाबर महाराज से एक इल्तजा करते हुए कहता है कि यह घडी लग जाने से शहर में यात्रियों की संख्या बढेगी। इसलिए एक नया महसूल लगाया तो बेहतर होगा। इससे मुल्क को बहुत फायदा होगा। शेवचेक भी महाराज के सामने दरख्वास्त पेश

करता है और महाराज के दरबार में दस्तगारों के आठ नुमाइन्दे हो इसकी माँग नगरपालिका की ओर से करता है। महाराज टाबर और शेवचेक की बातों को सुनकर कहते है गौर किया जायेगा। बीच में ही क्रुध्द हो उठते हुए हुसाक से कहते हैं, किसकी इजाजत से तुमने यहाँ पर घड़ी को लगा दिया है? अब दस्तगार लोग हमसे छिपकर काम करने लगे है। वे हानूश से पूछते है, यह घड़ी तुमने क्या सोचकर बनाई थी ? तब हानूश विनम्र से कहता है कि, "हुजूर, बचपन से ही मुझे घड़ी बनाने का शौक था। हुजूर, यह घड़ी मैंने बनाई है, महाराज के राज्य की शान बढ़ाने के लिए, अपने महाराज की खुशी के लिए, महाराज के कदमों पर अपनी नाचीज ईजाद भेंट करने के लिए, महाराज की इस राजधानी की रौनक बढाने के लिए...... ।"[22] हानूश की यह बात सुनकर महाराज खुश होते हैं। हानूश को एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ देने का आदेश देते हैं और दरबारी का पद भी। तभी महाराज फिर पूछताछ करने लगते हैं। हानूश महाराज के सवालों का जवाब देता है। हानूश की जवाबों से उत्साहित होकर हुसाक बोल उठता है कि हुजूर की कृपा हो तो नगर में घड़ी साजों की एक जमात भी बन सकती हैं। हम घड़ीयाँ बनाकर दिसावर में भी भेज सकते हैं। इससे हमारे देश का नाम रोशन होगा। हुसाक की बातों को सुनकर महाराज भडक उठते हैं। कहते है कि, "तो फिर यहाँ घड़ी लगाने में क्या तुक है? अगर शहर-शहर घड़ियाँ लगेंगी तो इस घड़ी की अहमियत ही क्या रह जाएगी, नदी के पार का तुला राज्य हमारा दुश्मन है। हमारी घड़ी उस राज्य में भी लग सकती है, क्यों ? और भी जगह-जगह और मुल्कों में, और शहरों में लग सकती है। फिर इसी घडी को यहाँ लगाने की क्या जरुरत थी ? इसे भी किसी देश में बेच दिया जाता ? नगरपालिका को फायदा होता ? क्यो ?"[23] फिर महाराज कहते हैं कि अगर घड़ी और शहर या नगरों में होगी तो हमारी घड़ी को कौन देखेगा ? महाराज हानूश की ओर देखते हैं और कहते है कि तुम झूठ बोले कि तुमने यह घड़ी हमारे मुल्क की शान बढ़ाने के लिए बनाई है! फिर वे हुसाक की ओर देखते हैं और कहते हैं - यह बादशाह का अपमान है कि एक घड़ी उसके कदमों पर रखी जाए और उससे बेहतर दूसरी घड़ी किसी और सौदागर के हाथ बेच दी जाये! फिर वे कहते है कि अब इस आदमी पर कड़ी नजर रखनी होगी। हानूश महाराज की बात सुनकर भयभीत स्वरा में कहता है कि एक घड़ी

बनाने में उसकी आधी जवानी बीत गई है। अब उसका दूसरी घड़ी बनाने का कोई इरादा नहीं है। महाराज हानूश की बातों को सुन लेते हैं और उसे कहते हैं कि तुमने पहले घड़ी बनाते समय हमसे क्यों नहीं पूछा? कल तुम कोई दूसरी घड़ी बनओगे और इसके लिए किसी सरपरस्त से भी यही कहोगे। अब हमें तुम पर विश्वास नहीं है। महाराज आदेश देते है कि हानूश कुल्फसाज को उसकी आँखों से महरूम कर दिया जाय । उसकी दोनो आँखें निकाल दी जाएँ। हॉल में सभी ओर सन्नाटा छा जाता है। हुसाक महाराज से यह न करने की बिनती करता है लेकिन महाराज किसी की नहीं सूनते। हानूश घुटनों के बल बैठकर गिडगिडाने लगता है। सैनिक हानूश को पकडकर बाहर ले जाते हैं। महाराज अन्त में कहते है ऐसी नायाब घड़ी तो मुल्क में एक ही रह सकती है, और बाहर जाने लगते है।

तृतीय अंक

पहला दृश्य :-

लगभग दो साल बीत जाते हैं। हानूश की घड़ी को देखने के लिए यात्रि लोग शहर में भीड करते है। लेकिन हानूश का दु:ख यह है कि एक ओर उसे अन्धा किया है तो दूसरी ओर उसे राजदरबारी बना दिया गया है। हानूश अपने उसी घर में रह रहा है लेकिन उसका घर अब पहले से बेहतर बड़ा आरामदेह और सुसज्जित हो गया है।

कात्या सदा की भाँति अपने घर के कामकाज में व्यस्त है। इतने में हानूश का मित्र ऐमिल घर में आता है। कात्या उसे देखकर कहती है कि क्या कोई बुरी खबर लाए हो ? तो ऐमिल कहता है बुरी नहीं, अच्छि खबर लाया हूँ। तुला से एक धनी सौदागर आया है और वह चाहता है कि हानूश उसकी नगरपालिका के लिए घड़ी बना दे। ऐमिल की बात सुनकर कात्या कहती है कि बादशाह ने तो अब हानूश को अन्धा किया है। फिर जान से भी हाथ धो बैठेगा। तुम पहले भी हानूश को उकसाते रहे हो। इसी कारण घर पर हमेशा मुसीबत आई है। तब ऐमिल कहता है कि यदि हानूश अपने शौक से दूर रहेगा तो वह बहुत दु:खी रहेगा। जो लोग दुनिया में कोई न कोई नया करिश्मा करके दिखाते है तब उन्हें तरह-तरह के कष्ट और दु:ख उठाने ही पड़ते है और यह दु:ख हानूश ने भी उठाये हैं। ऐमिल की बात सुनकर

कात्या रो पडती है। वह कहती है जब हानूश की आँखे थी तब वे सारा दिन घर पर बैठा करते थे। लेकिन अब आँखें नहीं तो सड़कों पर भटकता है। घर पर बैठ ही नहीं सकता। ऐमिल कात्या को समझाने की कोशिश करता है। तब कात्या कह उठती है कि बादशहा सलामत के वजीफे के कारण जैसे-तैसे दिन कट रहे हैं। वह कोई मुसीबत उठाना नहीं चाहती।

ऐमिल कात्या को हर बात से यही बताना चाहता है कि हानूश इस शहर में रहेगा तो हानूश की ही परेशानी बढेगी। वह कात्या से कहता है कि जब कभी घड़ी बजती है तो हानूश के दिल पर छूरीयाँ चलती है। वह कात्या से कहता है कि हानूश तीन बार घड़ी को तोड़नें की कोशिश कर चुका है। तब कात्या यह बात सुनकर यान्का और जेकब से कहती है हानूश को घड़ीवाले चौक की तरफ नहीं ले जाया करें। वह ऐमिल से यह भी कहती है कि हानूश घड़ी की आवाज सुनकर ही जी रहा है। यदि उसे दूसरी जगह ले जाया गया तो वह परेशान हो उठेगा। कात्या की बात सुनकर ऐमिल कात्या से कहता है, "कात्या, हानूश आँखों से अन्धा है, लेकिन उसके हाथ सही-सलामत है, उसकी सूझ कायम है, वह अभी बूढा नहीं हुआ है, उसके बदन में ताकत है - - - अगर वह फिर से घड़ी बनाने के काम में लग गया तो उसका दु:ख दूर हो जाएगा, उसकी जान में जान आ जाएगी।"[24] ऐमिल कहता है कि तुम लोग चुपचाप शहर से निकल जाओ। जेकब उसके साथ होगा तो वह हानूश की घड़ी बनाने के काम में आँखों का काम करेगा। दोनो मिलकर घड़ी बनाएँगे। लेकिन कात्या ऐमिल के प्रस्ताव से सहमत नहीं होती। कात्या ऐमिल से यह भी कहते है कि तुम क्यों हमारा घर बर्बाद करने पर तुले हो ? इसी समय गली में शोर मचने की आवाज आती है। पूछने पर पता चलता है कि बादशाह की सवारी से टकराकर हानूश घायल हो गया है। जेकब और यान्का भी उसके साथ थे। ऐमिल के पूछने परे जेकब सब कुछ बता देता है। कात्या बातों को सुनकर रोने - सिसकने लगती है। वह ऐमिल से पूछती है कि उसने ऐसा क्यों किया? तब ऐमिल कात्या को धीरज बाँधता है और कहता की वह बहुत दु:खी है। इसी कारण ऐसा करके वह बादशाह पर अपना गुस्सा जताना चाहता हो। ऐमिल की बात सुनकर कात्या कहती है कि हानूश ने जान-बूझकर अपनी जान पर खेल जाने की कोशिश की है। वह एक दिन इसी तरह अपनी

जान ले लेगा। मैं अब क्या करुँ? और कहाँ जाऊँ? समझ नहीं आता ? पहले हानूश सबकुछ मुझसे कहता था। लेकिन अब कुछ भी नहीं कहता, गुमसुम बना रहता है। फिर वह ऐमिल से कहती है, "तुम्हारा सुझाव मुझे मंजूर है, और यहाँ से चले जाने में ही उसका भला है तो मुझे मंजूर है। ऐमिल तुम जैसा कहो, मैं वैसा ही करूंगी। मैं हानूश को लेकर यहाँ से चली जाऊँगी, हम सब चले जाएँगे। उसे इस नरक से तो छुटकारा मिलेगा ? तुमने हानूश से कभी बात की है?"[25] तब ऐमिल कात्या से कहता है कि साल भर पहले एक बार कहा था। अब अगला महिना तीर्थयात्रा का महिना हैं। तुम लोग भी तीर्थयात्रा के बहाने यहाँ से निकल जा सकते हो।

हानूश, कात्या और ऐमिल के बातों के दरम्यान आ जाता है। कात्या दौड़कर हानूश को थाम लेती है। हानूश कहता है कि उसे कोई चोट नहीं आई, फिक्र करने की कोई बात नहीं है। कात्या हानूश को बिठाती है और पूछती है। हानूश कात्या की परेशानी न बढ़े इस लिए झूठ बोलता है। लेकिन कात्या हानूश के झूठ को पकडती है वह कहती है क्या तुम जान-बूझकर बादशाह सलामत की सवारी के आगे कूद नहीं गए थे? इसलिए कि तुम उनकी गाड़ी के नीचे कुचले जाओ। हानूश चूप रह जाता है। वह फिर पूछने पर स्वीकार करता है कि, "कात्या कभी कभी ऐसा जरूर होता है, मुझ पर जनून-सा चढ जाता है। हर बार जब घड़ी बजती है तो मुझे लगता है, मेरे अन्धेपन का मजाक उड़ा रही है, जब बजती है तो लगता है सभी लोग हँसने लगे हैं, --- मुझ पर एक अजीब पागलपन - सा छाने लगता है, --- मैं सबकुछ देख पा रहा हूँ --- हर बार बजाने पर मानो कह रहीं है कि हानूश न तो अन्धा हुआ है, न मरा है ----"[26] तब कात्या हानूश का हौसला बढ़ाते हुए कहती है, तुम सचमुच एक दिन घड़ी बनाओगे, तुम्हारी आँखें फिरसे लौट आएँगी। कात्या हानूश को सहारा देकर पिछले कमरे में ले जाती है। यान्का भी उसके पीछे जाती है। ऐमिल जेकब से कहता है कि तुम यहूदी सराय चले जाओ और जोर्जी नामक तुला के सौदागर से मिल लो। वह तुम्हें सब बातें बता देगा, और मुमकीन है, तुम्हें यह शहर छोड़कर जल्दी ही यहाँ से चले जाना पड़े। बाद में ऐमिल कात्या से भी कहता है मैंने जेकब को सौदागर के पास भेजा है। वह कहता है कि हानूश के अन्दर घड़ी बनाने की ख्वाहिश अभी तक मौजूद

है। उसके अन्दर की बौखलाहट उसे चैन नहीं लेने देती। पर जैसे भी हो उसकी यह बेचैनी दूर करनी होगी। कात्या बातों को सुनती है लेकिन थोडी डर जाती है। वह ऐमिल से कहती है यदि महाराज को पता चला तो बावले कुत्तों से हमें नुचवा देंगे। ऐमिल कात्या को धीरज रखने को कहता है। पिछले कमरे से हानूश का प्रवेश होता है। वह दहलीज पर खड़ा है और ऐमिल और कात्या से पूछता है तुम लोगों ने घड़ी को बजते सुना है ? इस वक्त तो उसे बजना चाहिए था, पर बजी नहीं। वह अत्याधिक व्यग्र और उत्तेजित हो उठता है। अपने आप आगे को बढ़ता है और ठोकर खाकर गिरते गिरते बचता है। उसी उग्र स्वर में जेकब को आवाज देता है। और घड़ी बन्द होने के कारण ढुंढने लगता है। कात्या उसे शान्त करते हुए कहती है कि बन्द हो गई तो इस तरह परेशान क्यों होते हो ? तुम भी तो यही चाहते थे कि बन्द हो जाए। इस बात पर हानूश कहता है, "हाँ, अच्छा हुआ बन्द हो गई। मेरी बला से। दो साल भी नहीं चली। कोई पूर्जा टूट गया होगा। मगर कौन-सा पुर्जा? चलो अच्छा हुआ, अपनी मौत मर गई। हम दोनों में होड़ चल रही थी कि पहले कौन दम तोड़ता है --- नीचे धूरे में भी जंग लग गया होगा। मीनार में सीलन थी। चलो, अच्छा हुआ, बहुत अच्छा हुआ।"[27] इसके बाद कात्या और ऐमिल दोनों मिलकर हानूश से कहते है कि हमने फैसला किया है कि हम यह शहर चुपचाप छोड़ देंगे। और तुला में जाकर रहेंगे। वहाँ पर रहकर तुम दूसरी घड़ी बनाओंगे। हानूश को यह बात मजाक लगती है। वह कात्या से कहता है तुम मेरे साथ कौन सा नाटक खेल रही हो ? इसी बातचीत के बीच बाहर से शोर आने लगता है। गली में बातों की आवाज आने लगती है - हानूश ही घड़ी बन्द हो गई है। सैकड़ों यात्री दूर तक मीनार के सामने खडे हैं और कहते हैं कि घड़ी की सुइयाँ खड़ी-की खड़ी है। न मुर्ग ने बाँग दी है, न सन्त दर्शन देते हैं। घड़ी बिल्कुल चुप है। लोगों की बातों को सुनकर हानूश उठ खड़ा होता है। उत्तेजित हो उठता है। जेकब को पुकारता है। उसका तन-बदन काँप रहा है। वह बड़बड़ाता है।

हानूश का दरवाजा खुलने पर एक अधिकारी अपने सहायक अधिकारी के साथ हानूश के घर आया है। वह हानूश से कहता है कि बड़े वजीर ने बुलावा भेजा है और आप हमारे साथ चलिए। उन्होंने हमें हुक्म दिया है। वे जानना चाहते है कि आखिर घड़ी बन्द क्यों हो गई है? वह अधिकारी यह

भी कहता है कि बादशहा सलामत इस पर बहुत नाराज है। अधिकारी की बात सुनकर हानूश कहता है अन्धी आँखों से मैं उसकी दुरूस्ती कैसे कर सकता हूँ? वह मुस्कुराते हुए व्यंग्य भाव से कहता है मैं नहीं समझता था कि इन दो आँखों की महाराज को फिर कभी भी जरुरत पड़ सकती है। मेरा सबसे बड़ा औजार मेरी आँखें है। वह यह भी कहता है कि साहब मैं आपके साथ चलुंगा। मैं आपके पीछे-पीछे एक वफादार कुत्ते की तरह, आपके कदमों में लौटता हुआ चलुंगा। हानुश दोनों अधिकारियों के साथ घड़ी की ओर प्रस्थान करता है। कात्या कुछ डरसी जाती है, लेकिन हानूश उसे आधार देता है। कात्या को इस बात का डर है कहीं सरकार से बदला लेने के लिए हानूश घड़ी को तोड न दे। वह ऐमिल से कहती है जेकब को उसके पास भेंज दे। ऐमिल तो कहता है, जेकब तो शहर छोड़ चुका होगा। अब तक तो वह पुल पार कर चुका होगा। उसे मैं कहाँ ढूँ ढूँ ? सुनकर कात्या बेचैन होती है।

तृतीय अंक

दूसरा दृश्य :-

एक अधिकारी और एक सरकारी कारिन्दे की निगरानी में हानूश को मीनार के अन्दर लाया जाता है। एक अधिकारी उससे कहता है कि घड़ी सामने है और अब इसकी दुरुस्ती करो। तो दूसरा अधिकारी हानूश की इस बात की ओर संकेत करता है कि बादशहा सलामत बहुत नाराज है। घड़ी के कारण रियासत को बहुत नुकसान है। और तुम्हें यह काम करना ही पडेगा। हानूश बातों को सुनता है। अधिकारी से कहता है कि तुम मुझे घड़ी के सामने ले चलो। घड़ी की कमानी कहाँ पर हैं? फिर वह कहता है कि आप मेरी मदद कीजिए। मीनार के अन्दर कही औजारों का एक बक्सा है, उसे खोजकर मेरे पास ले आइए। अधिकारी बक्से को ढूँढकर हानूश के सामने रख देता है। हानूश कहता है कि अब आप जाइए और मेरी मदद के लिए किसी भी आदमी को मेरे पास भेज दीजिए। अधिकारी चले जाने पर हानूश बक्से से एक हथौड़े को ढूँढता है और घड़ी की ओर आगे बढ़ जाता है। अब वह घड़ी को तोड़ देना चाहता है। वह सोचता है कि हथौड़े का किसी एक नाजूक पुर्जे पर भी वार पड़ जाए तो घड़ी का काम तमाम हो जाएगा। इसलिए वह लीवर को टटोलता है ताकि उस पर वार करके सदा के लिए घड़ी

को बेकार कर दे। लेकिन जैसे ही उसकी उँगलियाँ लीवर को छु लेती है कि उसका पूरा बदन रोमांचित हो उठता है। और अगलेही क्षण उसे पता चलता है कि लीवर टूटा है। वह प्यार से घड़ी के एक-एक पुर्जे को छुने लगता है। उसका मन उसे कहने लगता है यह मेरी घड़ी है, यही मेरी घड़ी है। लेकिन अब क्या ? वह सब सोच ही रहा है कि सीढ़ियों पर कदमों की आवाज आती है और एक आदमी उसके नजदीक आकर उसे कहता है कि उसकी मदद के लिए भेजा गया है। वह हानूश से कहता है कि मैं दस्तकार हूँ, लोहारी का काम करना मेरा पेशा है। वह हानूश की प्रशंसा करता है। हानूश की सराहना करते हुए कहता है कि जब तुमने घड़ी बनाई थी तब हमने तुम्हारे हाथों में फूल रखे थे। और आज घड़ी के सामने तुमसे मुलाकात हो गई । साथ ही साथ वह हानूश से कहता है कि तुम दुःखी हो इसलिए चुप हो। बताओ, हम तुम्हारी क्या मदद करें? वह आदमी हानूश के हुनर की प्रशंसा करता है। उसे कहता है कि तुम तो इन पुर्जो को हाथ लगाते ही समझ जाओगे। यह तो तुम्हारे हाथ की बनाई चीज है। इसे तो तुमने जन्म दिया है इसी कारण तुम घड़ी की अंग अंग से परिचित हो। तुम उसे सहजता से दुरूस्त कर सकते हो। उस आदमी की बातों को सुनकर हानूश का घड़ी के प्रति मोह जागने लगता है और हानूश अपने से बात करने लगता है।

खिडकी के बाहर हल्का सा उजाला नजर आने लगता है। हानूश अपने काम में व्यस्त है। कात्या रोशनी के दायरे में हानूश के पास खडी है। हानूश अस्तीनें चढाए मशीन पर झुका हुआ है। वह कात्या से कहता है कि सच बताऊँ तो मैं घड़ी को तोडने आया था, पर जैसे ही मैंने कमानी पर हाथ रखा तो मुझे लगा कि मैंने घड़ी के दिल पर मेरा हाथ खडा है। इसके बाद मुझसे घड़ी को तोड़ा नहीं गया, मेरा हाथ उठता नहीं था। मेरी मदद के लिए आये उस भोले इन्सान ने मुझे कहा, ''तुम घडी को साथ कैसे रूठ सकते हो हानूश, तुम्हीं ने तो उसे बनाया है। बनानेवाला, कभी भी अपनी चीज को तोड़ता है?' उसकी यह बात सुनकर हानूश कात्या से कहता है कि मुझे शर्म-सी महसूस होने लगी। मैं अपने को बहुत छोटा महसूस करने लगा। यह घड़ी तो मैंने अपने लिए नहीं बनाई थी। यह सबकी घड़ी है। घड़ी के बनने पर लोग मुझे आशीर्वाद दे रहे थे, मेरे हाथों में फूलों के गुच्छे रख जाते थे और मैं उस घड़ी को

तोडने की सोच रहा हूँ। कात्या कहती है वह उसके लिए खाना लाई है। हानूश खाना खाने के लिए बैठ जाता है।

प्रकाश के सहारे दृश्य फिर बदलता है। बूढा लोहार हानूश के पास खड़ा है। हानूश घड़ीपर काम कर रहा है। बूढा लोहार हानूश के कहने पर नया लीवर बनाकर लाया है, जिसे हानूश घड़ी में लगा रहा है। काम होने पर घड़ी की टिक्-टिक् सुनाई देने लगती है। हानूश के चेहरे पर आनंद का भाव दिखाई देता है। कात्या और यान्का भागकर उसके पास आ जाती हैं। इ सी समय एक अधिकारी हानूश के पास आता है और उसे हानूश का पता पूछता है। वह उसे कहता है कि हानूश कुल्फसाज ! तुम्हें उसका पता अवश्य मालूम होगा। हानूश उरसे कहता है कि उसे जेकब के बारे में कुछ पता नहीं। वह उसे यह भी कहता है कि जेकब की अब कुछ जरुरत नहीं है। घड़ी अब चलने लगी है। तभी अधिकारी अपनी आवाज को सख्त बनाते हुए हानूश से कहता है कि, ''हानूश कुफ्लसाज, तुम्हारी साजिश पकड़ी गई है। तुम यहाँ से भाग जाने की साजिश कर रहे थे। इस रियासत को छोड़कर दूसरी किसी रियासत में घड़ी बनाने जा रहे थे, सरकार की मनाई के बावजूद ! बादशाह सलामत के हुक्म की खिलाफ वर्जी कर रहे थे। बादशाह सलामत ने तुम्हें तलब किया है।''[28] अधिकारी की बात सुनकर हानूश ठिठक जाता है, फिर बड़ी आश्वस्त आवाज में कहता है कि महाराज का हुक्म सिर आँखों पर ! मैं हाजिर हूँ । अब मेरा चाहे जो हो, मुझे चिन्ता नहीं। जेकब इस राज से, इस शहर से चला गया है तो अच्छा ही हुआ। अब मेरे मरने पर भी घड़ी का भेद जिन्दा रह सकेगा। और सबसे बड़ी बात यह है कि आविष्कार जीता रहे। वह कात्या को अब बेफिक्र रहने को कहता है। फिर घड़ी की ओर देखते हुए बुदबुदाता है कि मुझे विश्वास है, अब घड़ी बन्द नहीं होगी, कभी बन्द नहीं होगी। वह अधिकारी से यह भी कहता है कि जहाँ मन आए ले चलो। सिपाही हानूश को पकडकर सीढ़ियों की ओर ले चलते हैं। इतने में घड़ी बजने लगती है। हानूश रूक जाता हैं, मुड़कर घड़ी की टन-टन सुनता है। उसकी आँखों में खुशी के आँसू चमक उठते हैं। वह मुस्करा उठता है और सीढ़ियों की ओर चल देता है।

"कबिरा खड़ा बाजर में" नाटक की वस्तु :-

'कबिरा खड़ा बजार में' भीष्म साहनी का सुप्रसिद्ध नाटक है। कबीर के जीवन की सुप्रसिद्ध घटनाओं और प्रसंगों को इस नाटक में दर्शाया है। कबीर के विद्रोही वृत्ति पर प्रकाश डालने का काम नाटककार ने यशस्वीता से किया है। समाज में स्थित अंधविश्वास, साम्प्रदायिकता, धर्माडम्बर, , संकीर्ण विचारधारा पर प्रहार करके नाटककार ने मानव में स्थित अज्ञान को दूर करने का प्रयास किया है। यह नाटक तीन अंकों में लिखा गया है। इस नाटक के पहले अंक में पाँच दृश्य, दूसरे अंक में तीन दृश्य और तीसरे अंक में एक दृश्य है।

✻ पहला अंक

दृश्य एक :-

पहले अंक के दृश्य एक में जुलाहों की बस्ती दिखाई है। बस्ती में छोटे छोटे झोपडे हैं। कहीं सूत पकाया जा रहा है तो कहीं खड्डी चल रही है। एक झोंपडे के सामने कबीर के पिता नूरा सूत पका रहे है। इतने में एक जुलाहा व्यक्ति नूरा के पास आता है। नूरा उसे कहता है कि आज तुम बहुत जल्दी घर आये हो ? कुछ कमाई तो कर लाये होगे? कबीर तुम्हें बाजार में मिला क्या ? उसका कुछ माल बिका क्या नहीं? नूरा के प्रश्नों का उत्तर देते हुए जुलाहा व्यक्ति कहता हैं - दूकानदारों ने पहला ही माल न बिकने के कारण कुछ नया लिया नहीं। बजार में मन्दी का माहौल है। मैं तुम्हारे ही थान लेकर आया हूँ। कबीर ने कहा था कि थान घर पर पहुँचा देना, और संदेशा दिया है कि शाम तक घर लौट आयेगा। वह नूरा को यह भी कहता है कि कबीर कोतवाली चौक के पास बहुत-से लोग उसे घेरे खड़े थे। तुम उसे कुछ समझाओ, बहुत बड़बोला है। क्या फिर कोई बात हुई है? यह प्रश्न नूरा पूछने पर वह कहता है कि "वही रोज की बक-झक , और क्या ? कुछ लोग उसकी बात सुन सह लेते हैं, कुछ नहीं सह पाते । किसी ने जाकर कोतवाल से शिकायत कर दी तो लेने के देने पड़ जायेंगे।"[29] वह नूरा को कह देता है आज बडे महंत की सवारी निकल रही थी। वहाँ किसी लौंडे को महंत के आदमीयों ने बेंत मारे। कबीर बीच में पड़ा इसलिए महंत के आदमी उसे छोड उल्टे कबीर पर ही टूट पडे। उससे पहले

कबीर एक मौलवी के साथ भी उलझ रहा था। कबीर की माँ नीमा दरवाजे पर खडी यह सब बातें सुन रही थी। नूरा नीमा से अपने बेटी की बातें सुनने कहता है।

जुलाहा व्यक्ति कहता है कि पहला कोतवाल भला मानुस था, लेकिन यह आया हुआ नया कोतवाल ऐसा आदमी है कि जिन्दा गाड़ देता है। इसका कोई भरोसा नहीं है। सुनने को यह आया है कि इस नये कोतवाल का दादा तैमूर लंग की फौज के साथ आया था। दिल्ली के खून-खराबें में उसका हाथ था। वह नूरा को यह सलाह भी देता है कि वह कबीर को मण्डी न भेजे। खुद मण्डी में जाये और काम निपटाया करें। कबीर की शादी करें ताकि शादी की बेडियाँ पडने पर वह सडकों पर नहीं घूमेगा। कबीर की माँ नीमा दरवाजे पर खड़ी बातें सुनती है। नूरा भी गुस्से में आकार कहता है कि कबीर की वजह से जान साँस में आ गयी है। वह जुलाहे से कहता है कि वह हमारी कुछ सुनता नहीं। दो बार घर से भाग चुका है। नीमा भी कहती है कि हमें तो डर रहता है कि कहीं कोई बात मुँह से न निकल जाये कि फिर कबीर भाग खड़ा हो। नीमा के लाड के कारण ही कबीर बिगडा है। जुलाहा फिर नूरा को सलाह देता है कि वह कबीर का ब्याह कर दे, खुद थान-वान सँभाल ले और वह निकल जाता है।

जुलाहा के निकल जाने पर नूरा और नीमा में कुछ बातें चल रहीं है। नूरा नीमा से कहता है कि कबीर तो हमारी जान लेकर रहेगा। न जाने किसको हम उठा लाये ? सच बात तो यह है कि कबीरा नूरा और नीमा का बेटा नहीं है। वह एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। लोक लज्जा के कारण उस ब्राह्मणी ने उसे एक तालाब के किनारे छोड दिया था। संयोग से नवविववाहित दाम्पति नूरा और नीमा उसी मार्ग से जा रहे थे। नीमा को प्यास लगने के कारण वह तालाब के किनारे पानी पीने के लिए गयी। वहाँ उसे और नूरा को नवजात शिशु देखकर दयावश हो उठे। उसे अपने घर लाये और उसका बड़े ही लाडप्यार से माँ-बाप की तरह प्यार दिया। अपने बच्चे की तरह पाला। आज वहीं बच्चा कबीर नूरा की मुसीबत बन बैठा है। वह नीमा से यह भी कह देता है कि अगर मै दूसरा निकाह कर लेता तो घर में अपना बच्चा होता। कबीर तो हर रोज किसी ऐरे-गैरे से उलझा फिरता है और मुसीबत खड़ी

करता है। लट्ठ लिये लोग उसके पीछे घूमते हैं। नीमा नूरा से सब बातें चूपचाप सुनती है। वह कहती हैं कि कबीर को वह समझा देगी। लेकिन तुम उसके बारे में कुछ उल्टी-सीधी बातें मत किया करों। नूरा की बातों से नीमा को डर-सा लगा रहता है। लेकिन नूरा नीमा से कहता है कि "अपने अपने होते हैं, और पराये पराये। आदमी की तरह रहे तो भी कोई बात है। यह तो नयी-नयी खुड्डच करता फिरता है।"[30] इतने में कबीर कुछ थका हुआ-सा घर आता है। नीमा कबीर के लिए सत्तू बना लाने लिए अन्दर चली जाती है। कबीर नूरा से कहता है कि बजार में मन्दी के कारण थान नहीं बिके। नूरा व्यापार की कुछ सीख-सी देकर अन्दर चला जाता है।

नीमा और कबीर दोंनों बजार में घटित प्रसंग पर चर्चा करते है। नीमा कबीर से कहती है तुम पर यदि लोग बिगडते हैं तो तुम्हें कुछ करना नहीं चाहिए। तू यदिं तुम्हारे कवित्त के कारण हर किसी से दुश्मनी मोल लेता फिरेगा तो मेरा दिल बहुत डरता है बेटा। माँ की बातों को सुनकर कबीर खड़ा होता है और माँ को कसम देकर कहता है कि वह उसे सभी सच बातें बतायेगा। वह माँ से प्रश्न पूछता है कि जब मैं बाहर से आया तो बापू कुछ कह रहे थे। वह कह रहे थे कि पराये-पराये होते हैं, अपने अपने होते हैं, इसका क्या मतलब है? बेटे इस प्रश्न से नीमा घबड़ा जाती है। फिर कबीर कहता है कि "पहले भी मैंने उन्हें यह कहते सुना है। तू इसे न उठा लायी होती तो मैं दूसरा निकाह कर लेता। हम साँप पालते रहे हैं। इसका क्या मतलब है?"[31] नीमा बातों को भूलाना चाहती है। वह कबीर से कुछ कहना चाहती है तथा उसे खोना नहीं चाहती। लेकिन कबीर के अड के कारण उसके आगे हाथ टेंकती है और सब कुछ बताती है। वह कबीर से यह भी कहती है तुम बामनी के बेटे हो। यदि वह तुम्हें मिल जाये तो चले जाना, मैं तुम्हें रोकूंगी नहीं। हम छोटी जात के जो ठहरे। माँ की बात सुनकर कबीर माँ को बाहों में भर लेता है और कहता है गोद लिये बालक को भी कोई निकालता है ? वह भी उसे प्यार से कहती है कि तुझे देख-देखकर तो हम दोनों जीते हैं। अचानक उसके हाथ कबीर के पीठ पर लगे खून पर पडते हैं। नीमा सिर से पाँव तक काँप जाती है। नीमा उसे कुर्ता उतारने कहती है और जख्म पर हल्दी-तेल लगाती है। माँ को चिंतित देखकर कबीर माँ से कहता है कि मेरे मन में विभिन्न सवाल उठते

हैं। मैं उन सवालों का जवाब मुल्ला-मौलवी, पण्डित-सास्तरी से पूछता हूँ। लेकिन मेरे सवालों का जवाब नहीं मिलता तो मन बेचैन हो जाता है। वे मुझे कोडे देतें है। कोडे खाकर मेरी पीठ मजबूत हो गयी है।

कबीर की माँ नीमा उसे कोडे खाने से बचने के लिए कहती है की तू उन्हें उता दें कि तुम बामनी का बेटा है। तो कबीर हँसकर कहते हैं कि हिन्दू पूछेगा तो ब्राह्मणी का, तुर्क पूछेगा तो नीमा मुसलमानि का बेटा हूँ कहूँगा। फिर हिंदू-तुर्क दोनों कोडे नहीं मारेंगे। कबीर की बातें सुनकर नीमा की परेशानी बढ़ती है। वह कबीर को शादी करके घरवाली के साथ किसी दूसरे शहर जाने की बात करती है। उसे लगता है कि कबीर चुपचाप अपना धन्धा करें, बुनाई-कताई करे, गिरस्ती बसायें और किसी के झगडे-टण्टे में न पडे। नीमा कबीर को परेशानी से बचने के अनेकों तरीके बताती है लेकिन वह हँसकर हर सवाल का जवाब देता है। इतने में बाहर नुरा के आने की आहट आती है। नीमा उठ-खड़ी होती है। कबीर से कहती है यदि वह तुझे कहें तो बुरा मत मानना। आखिर वह भी तेरा बाप है। और चली जाती है। कबीर उठकर दीवार के पास जा खडा होता है। वह कहता है कि माँ को मेरी पीठ पर पडे घाव नजर आतें है लेकिन मेरा दिल कैसा छलनी हो रहा है, यह कोई नहीं देख पाता। मुझे शांति नहीं चाहिए। मुझे तो अँधेरे में रोशनी की लौ चाहिए। उसके मन में हर समय एक ही सवाल घुमता रहता है अगर मैं जों भी कहता हूँ यह सब झूठ है, तो फिर सच क्या है? कबीर का हृदय दुश्चिन्ताओं से घिर उठता है और कबीर पंक्तियाँ गुनगुनाने लगते है।

"परबति परबति मैं फिरिया
नैन गँवाये रोये
सो बूटी पाऊँ नहीं
जाते जीवन होय
सुखिया सब संसार है, खावे अरु सोवे
दूखिया दास कबीर है, जागे अरु रोवे।"[32]

इन पंक्तियों के साथ प्रथम अंक का प्रथम दृश्य समाप्त होता है और पर्दा गिरता है।

प्रथम अंक - दृश्य - 2 :-

नाटक के प्रथम अंक के द्वितीय दृश्य में यह दिखाया है कि कुरुक्षेत्र अखाडे के महन्त काशि में पहुँच गये हैं। चारो ओर बडे बाजे गाजे के साथ उनकी सवारी काशी में प्रवेश कर चुकी है। शहर में बड़ी सजावट की गयी है। कोतवाल देखरेख कर रहा है। तभी वे कायस्थ से माथे पर लगाने वाले विभिन्न टीकों का अर्थ पूछता है। कोतवाल के पूछे सवालों का जवाब देते हुए कायस्थ कहता है कि सफेद रंग का टीका लगाने वाले वैष्णव है तो लाल टीका देवी की पूजा करने वाले लगाते हैं। सीधे रूख टीका लगानेवाले शैव होते है। माथे पर एक रेखा केवल ब्रह्म को मानेने वाले लगाते है तो दो रेखा लगाने वाले जीव और ब्रह्म दोनों मानते हैं। किसी के माथे पर तीन रेखाऐं होती है वे जीव, ब्रह्म और प्रकृति को मानते हैं। जो ब्राह्मण टीका नहीं लगाते उसे चाण्डाल कहा जाता है। तो कोतवाल हँसकर कहता है कि हम चाण्डाल तो हुए। लेकिन कायस्थ कोतवाल को इस सच्चाई का परिचय देता है कि जिसके हाथ में भगवान ने शक्ति दी है उसकी जात नहीं देखी जाती।

कोतवाल कायस्थ से टीका किस चीज का है ? पूछता है तो कायस्थ उसे कहता है कि इसे तिलक कहते हैं। वैष्णव लोग चन्दन का तिलक लगाते हैं और शैव लोग हवन की राख जिसे विभूती कहा जाता है वह लगाते हैं। लाल बिन्दी रोली या खून से भी लगायी जाती है। दूर से नगारे की आवाजे आने लगतीं हैं। सवारी पहुँचने के इशारे होने लगते हैं। श्रध्दालू लोग सड़क के किनारे इकठ्ठा होने लगते हैं। कायस्थ कोतवाल से कहता है कि महंत शहर में नये मठ की नीव रखने आये हैं। और बड़े मन्दिर में मूर्ति की स्थापना करनेवाले हैं। जब कोतवाल कहता है कि मूर्तियाँ तो मुसलमान कारीगर ने बनाई हैं। तब कायस्थ कहता है कि मूर्तियों पर गंगाजल छिड़ककर उन्हें पवित्र कर लिया जायेगा। प्राण-प्रतिष्ठा के बाद ही मूर्ति देवता बन जाती है, उसके पहले तो पत्थर है।

दो-तीन स्त्रियाँ, सँवारी की ओर झुककर उस दिशा में नमस्कार करती हैं। एक जटाधारी साधु हाथ में बडा-सा चाबुक लिए प्रवेश करता है। जब कोतवाल पूछता है यह चाबुक किस लिए है? तो कायस्थ कहता है कि नीच जाति के लोगों को रास्ते पर से हटाने के लिए। साधु हवा में चाबुक चलाते हुए आगे बढ़ जाता है। दो सेवक हाथ में झाड़ू लिए महन्त की सवारी का रस्ता साफ कर रहे है। करतल ध्वनि, गायन, नगाडों की ध्वनि आदि की आवाज अधिक ऊँची आने लगती हैं। चाँदी का बड़ा पात्र लेकर एक साधु मन्त्रोच्चारण करता गंगाजल का छिडकाव कर आगे बढ रहा है। वह इस जल के माध्यम से रास्ते को पवित्र करने का काम कर रहा है। यह देखकर कोतवाल कायस्थ से कहते हैं अब हम यहाँ नहीं रूकेंगे। यदि कोई दंगे-फिसाद का डर हो तो हमें खबर कर देना और वे चले जाते हैं।

भाले, नंगी तलवारें, नेजे उठाये पंक्तिबद्ध अनुयाइयों का प्रवेश होता है। पीछे-पीछे छः साधुओं के कन्धे पर रखी, चाँदी की झिलमिलाती पालकी प्रकट होती है जिस पर प्याजी रंग के दुकुल वस्त्र में मोटे-से, जटाधारी त्रिपुण्डधारी महन्तजी बैठे हैं। उनकी आँखों में बड़प्पन का विश्वास है। पीछे दो साधु हैं। महिलाएँ चँवर झुला रही हैं। पालकी बीचोबीच रूक जाती है। महंतजी मुँह में पानी भरकर दर्शकों की दिशा में सामने और बायीं ओर कुल्ला करते हैं। लोग, विशेष रुप से स्त्रियाँ कुल्ले के पानी से सनी मिट्टी को तर्जनी से उठा-उठाकर माथे पर लगाती है। स्त्रियाँ उसे छाती पर, कानों पर, सिर पर भी लगाती हैं। महन्तजी पर पुष्प वर्षा होती है। शंख, डमरू और नगाड़े बजते हैं, शोभायात्रा आगे बढ़ जाती है।

दर्शक शोभायात्रा को देखकर विभिन्न प्रकार की बातें करते हैं। कोई कहता है कि महन्त जी आज चान्दी की पालकी में आये हैं। कुम्भ के मेले में जाते हैं तो सोने की पालकी में जाते हैं। भोजन और पूजा-अर्चना भी सोने के पात्रों से होती हैं। उनके मठ में एक सौ पन्द्रह हाथी हैं। उनके महात्म्य को लेकर तरह-तरह की बातें दर्शक नागरिक करते हैं। एक नागरिक तो यह कहता है कि महन्तजी पहुँचे हुए महात्मा है। जिस किसी को कभी घूरकर देखते हैं तो आँखों-ही-आँखों से भस्म कर डालते हैं। उनके

भोग के बारे में भी चर्चा करने लगते हैं। नागरिकों की चर्चा के बीच शोर होने की आवाज आने लगती हैं। पूछने पर पता लगता है कि एक साधु के हाथ में चाबुक है। साथ में दो-तीन पण्डे हैं और वे एक मासूम बच्चे को पकडकर मार रहे हैं। कबीर उस बच्चे को छुडवाने में कामयाब होता है। बच्चा भाग निकलता है लेकिन दो पण्डे कबीर को पीछे से आकर पकड़ लेते हैं। कबीर को धकेलकर बाहर ले जाते हैं। शोर होने लगता है। इसी शोर के बीच तोफ चलनी की आवाज आती है।

प्रथम अंक - दृश्य - 3 :-

नाटक के प्रथम अंक के तीसरे दृश्य में कोतवाल की बैठक चल रही है। इसमें महन्त मौलवी भी शामिल है। महन्त कोतवाल से कहता है कि काशी के महाराज के अनुरोध पर ही मैं यहाँ आया हूँ। महन्त कोतवाल से एक प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि मठ की जमीन तो हमारे नाम हुई है। लेकिन मठ की जमीन के ठीक सामने नीच लोगों की बस्ती है, जिसमें डोम-चमार रहते हैं। उन्हें वहाँ से हटा दिया जाय। महन्त कोतवाल को रिश्वत भी देता है। कोतवाल तत्काल शेख साहिब को बुलाते हैं और जमीन के बारे में जानकारी लेते हैं। जानकारी के समय उन्हें पता चलता है कि वहाँ रहनेवाले लोग बहुत दिन से यहाँ बैठे हैं। बहुत दिन पहले ये लोग बंगाल से आये थे जब वहाँ बदअमनी फैली थी। शेख साहिब की बात सुनकर कोतवाल महन्त से कहते हैं कि आप की फरमाइश के बारे में सोचना पडेगा। डोमों की बस्ती उठाना यह काम इतना आसान नहीं है। इतने में मौलवी गुस्से में हैं जो बैठक में प्रवेश करते हैं और कोतवाल से आदाब अर्ज करते हैं। कोतवाल मौलवी को तशरीफ रखने के लिए कहते हैं। महन्त को तशरीफ ले जाने के लिए कहकर हम आपको सोचकर जवाब देंगे कहते हैं।

कोतवाल मौलवी के घुस्से को समझता है इसलिए घुस्से में मौलवी का यथोचित आदर-सत्कार करता है। मौलवी को आने का कारण पूछता है। मौलवी साहिब कबीर की शिकायत लेकर कोतवाल के पास आये हैं वे कोतवाल को कबीर का मुँह बंद कराने के लिए कहते हैं। मौलवी कोतवाल को भडकाने वाली बातें भी करते हैं। लेकिन कोतवाल मौलवी की बातों को सुनता है और कहता है कि

कबीर को बकने दीजिए जो बकता है। "आप यह मत समझिये कि हम इन बातों से बेखबर हैं। --- दीन की खिदमत मुल्ला-मौलवी इतनी नहीं करते जितनी हाकिम करता है, यह बात गाँठ बाँध लो। लेकिन हाकिम हमेशा सोच-समझकर काम करता है, वह हिकमत से काम लेता है।"[33] वह जानता है कि भावुकता में बहाने वाला प्रशासक कभी सफल नहीं होता। उसे बुद्धि से और कुटनीति से काम लेना चाहिए। इसी बात को ध्यान रखकर वह कहता है हाकिम कभी जज्बाती नहीं होता। वह सिर्फ दिमाग से काम लेता है। जज्बाती लोग कुछ नहीं कर पातें। कोतवाल मुसाहिब इस बात से भी परिचित करता है कि हाकिम अपने अजीज-से-अजीज दोस्त को भी फाँसी के तख्ते पर चढ़ा सकता है। खूबसुरत-से-खूबसुरत औरत को भी जिन्दा दफना सकता है। पर कोतवाल बिना किसी विशेष गंभीर कारण के कुछ ऐसा नहीं करता जिससे जनता में असंतोष फैले और राज्य में समस्या पैदा हो। यही कारण है कि वह कबीर के विरूद्ध कोई कड़ा कदम बहुत समय तक नहीं उठाता। इसी समय वहाँ एक भिखारी कबीर का पद गाता हुआ चला आता है। उसे कोतवाल एक अशरफी निकालकर देता है। और चोबदार से कहता है कि इस आदमी को पाँच कोडे लगाओ और खबरदार कर दो कि अगर फिर कभी कबीरदास का गीत गाता पकड़ा गया तो चमड़ी उधेड़ दूँगा। चोबदार की कोडों से वह अन्धा दुर्बल भिखारी मर जाता है। तो कोतवाल उसकी लाश को गली-गली घुमाने का आदेश देता है। वह जानता है कि इस घटना से लोग डर जायेंगे। न कोई दूसरा भिखारी कबीर के पद गायेगा और न कबीर का साथ देगा, न उसके विचारोंका समर्थन करेंगा। मौलवी को समझाते हुए वह कहता है कि "सुनो मौलवी, यह शहर हिंदुओं का मुकद्दस शहर है। यहाँ का राज हिन्दू है। वह लोदी बादशाह को खिराज देता है। अगर मजहब के नाम पर इस आदमी को पकडकर सजा देंगे तो किसी को बुरा लग सकता है।"[34] मौलवी और मुसाहिब सब समझ जाते हैं और आदाब बजाकर चले जाते हैं।

प्रथम अंक - दृश्य - 4 :-

'कबिरा खड़ा बजार में' नाटक के पहले अंक के चौथे दृश्य में यह दिखाया है कि कबीर अपनी झोपडी के बाहर खड्डी पर बैठा है। चादर बुनते समय खड्डी की लय के साथ-साथ "झीनी

झीनी बीनी चदरिया ---'' यह पद गुनगुना रहे है। इतने में कबीर के साथी रैदास और पीपा आते हैं। वे कबीर से पूछते हैं कि कल तुम किससे मिलने गये थे? तो कबीर कहता है कि मैं एक दच्छिन से आये हुए महात्मा का प्रवचन सुनने गया था। उनका प्रवचन सुनकर मुझे जीवन का महामन्त्र मिला है। उनके और मेरे विचार में समानता है। वह महात्मा कहते हैं कि कोई ऊँच या नीच नहीं हैं। सब समान है। सबको भगवान ने पैदा किया है। हम सब उसकी सन्तान है। सबको प्रेम करना, सबके प्रति दया, करूणा, सहानुभूति दिखाना, दु:खी का दु:ख कम करना यही सच्ची भक्ति है, यही सच्चा ईश्वर प्रेम है। अत: बाह्य धर्माचरण से अधिक महत्व है पवित्र भावों का, निर्मल हृदय का अर्थात मानव मात्र की सेवा का। इतने में कबीर का दोस्त सेना कुछ घबराया हुआ भागते हुए कबीर के पास आता है। वह बताता है कि अन्धा भिकारी कोतवाल के सामने तुम्हारे कवित्त गा रहा था। इस बात पर कोतवाल ने उसे कोड़े लगवाये, चौथे कोडे पर ही उसने दम तोड दिया। सेना कबीर से कहता है कि वह लोगों को बताये कि उसके पद न गाये, ताकि उनपर कोई मुसीबत नहीं आये। तब कबीर कहते हैं कि यह इस घटना का हल नहीं हो सकता। अब हम सब मिलकर अपने कवित्त गायेंगे। गली-बाजार में गायेंगे, समागम करेंगे, हम सत्संग लगायेंगे। लेकिन कबीर को इस बात का दु:ख होता है कि उस अन्धे भिखारी की माँ भी जो अन्धी है जब उसे इस बात का पता चलेगा तो उसे बडा दु:ख होगा। इसी समय भिखारी की अंधी माँ कबीर के यहाँ एक लडके के सहारे आती है। वह कहती है ''कबिरवा ! कबिरवा रे ! मेरे नन्दू ने तो आँखे मूँद ली। तू कहाँ है?''[35] अब मैं तुम्हारे कवित्त को गली-गली गाऊँगी। नन्दु का मरना मैंने सह लिया तो कोडे भी सह लूंगी। कबीर उस अन्धी माँ को अपने यहाँ आने के लिए कहता है लेकिन वह मानती नहीं। सेना और बशीरा उसके साथ चले जाते हैं। कबीर का दोस्त पीपा, कबीर से कहता है कि वह इधर सत्संग करेंगे तो मुल्ला-पण्डे हमें नहीं छोडेंगे। हाकिमों को भी बुरा लगेगा। कबीर पीपा की बातों को मानता नहीं वह और साथी रैदास फैसला करते है कि प्रभातवेला में बैठकर सत्संग करेंगे। जहाँ से बहुत से लोग गंगा-स्नान को जाते है। और ब्राह्मणों को भी पता चले कि छोटे जात वाले लोग इधर बैठते हैं। पीपा सोच-विचार करने के लिए कहता है तो कबीर मुस्कराकर कहते हैं -

"समझु देख मन मीत पियरवा

आसिक होकर रोना क्या रे

कहे कबीर प्रेम का मारग

सिर देना तो रोना क्या रे।"[36]

पहला अंक - दृश्य - 5 :-

नाटक के पहले अंक के पाँचवे दृश्य में यह दिखाया है कि कबीर के साथी सत्संग के लिए आ बैठे हैं। उनमें नाई सेना, बशीरा, और भी लोग बैठे है। सेना बशीरा से पूछता है कि तुम कहाँ के रहनेवाले हो; तो बशीरा अपना सारा इतिहास परदादा से लेकर आज तक का बता देता है। वह कहता है कि उसके परदादा को पाँच भाई थे। जब महम्मद बिन तुगलक ने इन्हें दौलाताबाद के लिए रवाना होने का हुक्म दिया तो दो रास्ते में ही खत्म हो गये। बाकी तीन दौलताबाद पहुँचे। फिर बादशहा ने वापिस दिल्ली कुच करने के लिए कहा तो लौटते समय दो रास्तें में खत्म हो गये। फिर वह कहता है कि हमारे परदादा को भी पाँच बेटे थे। जब दिल्ली में तिमूर लंग नाजल हुए तो दो सीधे दिल्ली की फसील के बाहर मारे गये, बचे तीन। जब बादशहा को ख्यात आया कि, युद्ध में मरे हुए एक लाख वाशिन्दों की याद में अपने वतन समरकन्द में मस्जिद बनाया जाय। मगर दिल्ली में एक लाख आदमी मौत के घाट उतारे जा चुके थे। तब तिमूर के सिपाही हमारे दादा की गली में घुस आये। उन्होंने हमारे दादा के दो भाईयों को पकड लिया। उन्हें मस्जिद के काम के लिए समरकन्द भेज दिया गया। मेरे पिताजी इसलिए बचे कि वह अपने भाईयों की लाशें ठिकाने लगाने गये थे। मेरे पिताजी के भी पाँच बेटे थे। इनमें से दो भूखमरी से मरे तो, दो बीमारी फूटी तो मर गये। बचे सिर्फ हम अकेले और अन्त में वह कहता है कि, "तो मैं साहिब दिल्ली का रहनेवाला हूँ। अब मेरे भी पाँच बेटे हैं। ---- "[37] इतने में रैदास आते हैं। कबीर भी आते हैं। वे सभी को यही कहते है कि इसी पंचगंगा घाटपर गुरु महाराज ने हमे गुरुदीक्षा दी है। गुरुदीक्षा के घटित प्रसंग को भी वे बताते हैं।

कबीर के सत्संग में भाग लेने के लिए अनेक लोग इकठ्ठा होते हैं। नन्दू की अन्धी माँ भी आती है। एक भक्त कबीर को सत्संग लगाने से पहले पूछता है कि मंदिर में जिस प्रकार घण्टी बजाई जाती है, उसी प्रकार घण्टी भी बजाओगे ? सत्संग के लिए किस ओर नजर करके बैठे? कबीर उसे जवाब में कहते हैं जिस ओर तुम्हारा मन आये तुम उसी ओर मुँह करके बैठो। भगवान तो चारों ओर मौजूद होते हैं। कबीर का सत्संग शुरू होता है। प्रथम रैदास पद गाते हैं। उनके बाद कबीर पद गाते हुए कहते हैं -

''मोको कहाँ ढूँढ़े बन्दे मैं तो तेरे पास में
ना मैं देवल, ना मैं मस्जिद, ना काबे कैलास में
ना तो कौने क्रिया कर्म में, नहीं योग बैराग में
खोजी होय तो तरत मिले हैं, पल भर की तालास में
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।''[38]

अर्थात - ईश्वर तो सर्वव्यापक है, सर्वशक्तिमान है। वह न मंदिर में है, न मस्जिद में, न कैलास पर है। वह तो सर्वत्र विद्यमान है। वह न तो किसी कर्मकांड, बाह्याचार से प्राप्त होगा। वह तो सब प्राणियों के साँसों में है। सबसे प्रेम करो, यही भक्ति है, इसी से भगवान मिलेंगे।

कबीर के इसी पद के बाद एक लड़का भागता हुआ आता है। वह कबीर को कहता है कि तुम्हारी झोपडी में आग लग गयी है। आग बस्ती में फैल रही है। तुम्हारी दोनों खड्डियाँ जल गयी हैं। कबीर लडके को माँ-बापू के बारे में पूछता हैं तो पता चलता है कि बापू के हाथ जल गये हैं। कबीर रैदास को सत्संग लगाये रखने कहते हैं। सेना और बशीरा कबीर को धीरज देते हैं। ब शीरा कहता है कि हम तुम्हारे साथ हैं। कबीर बशीरा की बात सुनकर मुस्कराते हैं और कवित्त बोलते हुए कहते हैं -

''हँसि-हँसि कन्त न पाइये, जिनि पाया तिन रोई
जो हँसि-हँसि ही हरि मिले, तो तन दुहागिनि कोई ।।''[39]

अर्थात - सुख सुविधा के मार्ग पर चलते हुए जिसने भी ईश्वर पाया है उसे हमेशा साधना मार्ग में कठिनाईयाँ सहनी पडी है। ईश्वर को पाने के लिए कष्ट न मिले हो ऐसा अभागिनी कोई नहीं है।

अन्त में दास कहते हैं कि कुछ देर के लिए सत्संग होगा और फिर कल यहि पर हम बैठेंगे। सभी थोडी देर के लिए ''मोको कहाँ ढूँढे बन्दे ------'' पद का गान करते हैं। नाटक का प्रथम अंक समाप्त होता है।

दूसरा अंक - दृश्य - 1 :-

कबिरा खड़ा बजार में के दूसरे अंक के प्रथम दृश्य में पीपा, सेना और बशीर सडक के किनारे एक चबूतरे पर बैठे हैं। एक-दूसरे के साथ बातचीत कर रहे हैं। पीपा कहता है कि महन्त के आदमियों ने गोरखनाथियों के पाँच आदमी मरवा डाले हैं। इस बात पर बशीर कहता है कि कबीर को ऐसे आदमीयों के मुँह नहीं लगना चाहिए। सेना भी कहता है कि शोभा यात्रा पर जितने साधु निकलते हैं, सभी भाँग-धतूरा पीते है। ऐसे आदमियों के साथ उलझना नहीं चाहिए। पीपा सभी से यह बात बताता है कि महन्त लोग मठ के सामनेवाली डोमों की बस्ती को हटाना चाहते हैं। उसी बस्ती में कबीर और रैदास देर तक गीत गा रहे थे। इतने में कबीर कन्धे पर कपडे का थान लेकर वहाँ आते हैं। उनके हाथ में इकतारा है। उस इकतारा को देखकर पीपा उसे इस बारे में पूछता है। कबीर इकतारा बजाकर दो-एक पंक्तियाँ गाकर दिखातें हैं। पीपा कबीर से कहते हैं कि कल मैं तुम्हारे घर गया था। पर तुम्हारे अब्बा ने बाहर से ही चलता कर दिया। बोले कोई नहीं है कबीर इधर। इधर मत आया करो और माँ ने तुम्हें समझाने को कहा। बातों को सुनकर कबीर हँसता है और कहता है कि तुम माई के चक्कर में मत पड़ना। तुम माई को नहीं जानते। वह तुम्हें यों फाँस लेगी, तुम्हें पता भी नहीं चलेगा, और तुम घर-घर, गली-गली मेरे लिए दुलहिन ढूँढते फिरोगे। अत: माई की याद में कबीर भावुक हो उठता है और अपने ध्यान में खो जाता है। कबीर सोचते है कि जिसके दिल में प्रेम हैं, उसके दिल में भगवान वास करता है। इस बात पर वह प्रेम के पद भी सुनाते हैं।

रैदास वहाँ आते हैं और कहते हैं कि हमारी तो घर से छुट्टी हो गयी। डोमों की बस्ती में गीत गाने के कारण बापू ने घर का रास्ता दिखाया है। इस बारे में बापू के पास किसी ने शिकायत की है। सेना कहता है कि महन्त ने कोतवाल को कहकर यदि डोमों की बस्ती को उखडवा दिया तो बहुत लोग बेघर होंगे। इतने में बस्ती के लडके को चाबुक से मारनेवाले साधु आते हैं। उन्हें देखकर कबीर उन्हें पूछते हैं कि आज किस शिकार पर निकले हैं, महाराज ? उस मासूम की चमड़ी उधेड दी। साधु और कबीर के बीच थोडी बहुत काना-पुसी होती है। सेना साधू को चले जाने को कहता है। फिर भी साधू को कबीर जाते समय सुनाते है -

''एकै बूँद, एकै मलमूतर, एक चाम एक गूदा
एक जाति है सब उत्पन्ना, को ब्राह्मण, को सूदा।''[40]

साधु बकबक करता हुआ चला जाता है। पीपा के पूछने पर कबीरा ज्ञानी महाराज से हुयी भेट के बारे में बताते हैं। कबीर कहते हैं जब मैंने ज्ञानी महाराज से पूछा कि ऐसा मार्ग बताइए जो सबके लिए हो, जिसपर गृहस्थी चले, साधू भी चले, हिंदु भी, तुर्क भी चले। तब महाराज तपस्या की और ज्ञानमार्ग की बातें करने लगे। तपस्या का अधिकार केवल ब्राह्मण और क्षत्रिय को है तो वेद छूना नीच जात के लिए मना है। कबीर के इस उत्तर से महाराज बिगड़ गये। वेद-पुराण की बातें करने लगे। इस बात पर नामदेव और रैदास चमार का उदाहरण दिया और कहा कि कोई ऐसा धर्म बताइए की इन्सान को इन्सान के साथ जोडे। इस बात पर फिर कबीर पीपा और सेना को कवित्त सुनाते हैं। इतने में दूर से मस्जिद में अजान होने की आवाज आती है। हँसकर कबीर बोलते है - ''लो पहुँच गये मुल्लाजी खुदा को जगाने।'' इतने में मौलवी वहाँ आते हैं पूछते हैं कि कौन काफिर इधर बक-बक कर रहा था ? कबीर सामने आते हैं और मौलवी को सुनाते हैं -

''चींटी के पग नेवर बाजे
सो भी साहिब सुनता है।''

कबीर के कवित्त सुनकर मौलवी बौखलाते है। मौलवी कबीर से कहते हैं तुम्हारे बाप नूरा की वजह से हम चुप हैं। मगर अब तुम बचकर नहीं जाओगे। और घुस्से से बाहर निकल जाते हैं। सेना डर-सा जाता है। कबीर उसे चिन्ता न करने कहते हैं। ये बातें तो होती ही रहती है कहकर पद कहते हैं -

"जाके मन विश्वास है, सदा गुरू के संग
कोटि काल झकझोरही तऊ न हो चित्त भंग"[41]

अन्त में सभी मिलकर "मोको कहाँ ढूँढे बन्दे, " पद का गान करते है। और नाटक के दूसरे अंक का प्रथम दृश्य समाप्त होता है।

दूसरा अंक - दृश्य 2 :-

नाटक के दूसरे अंक के दूसरे दृश्य में कबीर की शादी लोई से हो चुकी है। वह अपने नव-विवाहिता पत्नी को अपने जले हुए लेकिन रहने योग्य बनाया हुए घर में लेकर आता है। कबीर उसे कहता है कि तू इस घर में आ गयी है, तो लगता है कुछ भी नहीं जला है। झोपडें में उजियाला हो गया है। लोई सिर्फ कबीर की ओर देखती है लेकिन कुछ भी बोलती नहीं। अकेले कबीर उसके साथ बात करते रहते हैं। कबीर उसे गुंगी समझ बैठते हैं। तब लोई कबीर से कहती है कि जब तुम्हें गंगाजी में डुबोया था तो हमने देखा था। हमें लगा तू डूब जायेगा। वह कबीर से यह भी सवाल करती है कि क्या तू घर से भागा था ना ? तो कबीर उसे कहते हैं हाँ घर से भागा था। बनों में चला गया था। लेकिन अब कभी नहीं भागूँगा। तब मै बहुत बेचैन था। अँधेरे में भटक रहा था। कबीर कहते है कि अब मुझे मालूम हुआ है कि घर ही में सच्ची साधना हो सकती है। लोई कबीर की बातों को सुन हैरान होती है। इतने में कबीर की माँ नीमा वहाँ आ जाती है।

नीमा लोई से कहती है कि अब कबीर के देखभाल की जिम्मेदारी अब तेरी है। इसे घर में रोके रखना यह काम अब तुम्हारा है। इस बात पर लोई कहती है कि क्यों ? यह कोई ढोर-डंगर हैं जिसे बाँधकर रखना होगा ? चंगा-भला मानुस है। नीमा लोई से कहती है हमारी मनसा पूरी हुई। कबीर की

गिरस्ती बस गयी। लेकिन हम तुम्हें ब्याह कर ऐसे घर ले आये जिस घर को न दीवार है न आँगन न खाट-खटोला। लेकिन लोई समझदार हैं। वह कहती है - झोंपडा जल जो गया था, इसमें क्या बचता। नीमा वहाँ से चली जाती है।

लोई कबीर से विभिन्न प्रश्न पूछती है। वह कबीर से कहती है क्याय तुम साधु हो ? क्या झाड़-फूँक करते हो ? भूत-परेत भगाते हो? भभूत देते हो ? टोना-टीटका उतारते हो ? क्या तूम जोतसी हो क्या ? जनपतरी बाँचते हो ? कबीर लोई के सभी प्रश्नों को सुनता है। वह हँस पडता है। कहता है मैं साधु नहीं जुलाहा हूँ। हम लोग सत्संग लगाते हैं। एक दिन मैं तुम्हें वहाँ लेकर जाऊँगा। हम साधू-फकीर नहीं। यदि साधू होते तो ब्याह कैसे करते ? वह उसे यह भी बताते है कि तुम धीरे-धीरे सब कुछ जान जाओगी। लोई कबीर से कहती है कि उसने उन्हें पण्डों द्वारा गंगा में डुबाने की घटना को देखा था। इस घटना से वह बहुत घबरायी हुई थी। सांझ होने तक अकेली वहाँ बैठी थी। तुम्हारे शरीर को गंगा तट पर देखकर लगा कि तुम मर गये हो। अतः भागकर बापू के पास गई और सब बता दिया। लोई विवाह होने पर भी भीरुता नहीं है। वह विवाह के पहले होनेवाले प्रेम का रहस्य खुद कबीर को बता देती है। कबीर लोई का रहस्य जानकर उसे कहता है कि चाहे तो वह लौट जाये और साहूकार के बेटे के साथ विवाह करे। उसके साथ सुख से जीवनयापन करे। खुद वह उसे साहुकार के बेटे के यहाँ छोडने आयेगा। वह उसे चिन्ता न करने के लिए भी कहते हैं। कबीर लोई को खुद के गहने ले जाने के लिए कहते हैं। लोई जाने के लिए निकली है.लेकिन उसके दिल में कबीर के लिए दया का प्रेम भाव है। वह जाते समय कबीर से कहती है "लोगों से झगडा नहीं करना। तुम्हें कोई कोड़े लगाये तो हमें अच्छा नहीं लगता। हम कभी-कभी तुम्हें देखने आया करेंगी।"[42] कबीर घर की मरम्मत करने लगते हैं। बारीश गिर रही है। थोडी ही देर में लोई फिर वापिस चली आती है और कबीर से कहती है कि वह उसके साथ यही रहेगी। वह यह भी कहती है कि यह जिंदगी उसके साथ ही कोटेगी। कबीर भीग रही लोई का हाथ पकडकर घर के अंदर लेता है। कबीर जब उसे यह पूछते है कि उसका मन इतने जल्दी कैसे बदल गया? तो लोई उसे कहती है कि "मन पलट गया। हमें लगा, हम तेरे ही संग रहेंगी, तू जोर-जबरदस्ती

नहीं करता। तू खरा आदमी है। तुझे देखा नहीं होता तो और बात थी।''[43] कबीर लोई की बात सुन कर मुग्ध होते है। उसे आँखे मूँदने के लिए कहते है। आँखे न मूँदने पर लोई से मूँह फेरकर खड़ी होने के लिए कहते हैं। सन्दूक में से लाल रंग की चुनरी निकाल लाते है। लोई के कन्धों पर डाल देते है और कवित्त सुनाते है -

''भीजै चुनरिया प्रेम रस बूँदन
आरती साज के चली है सुहागिन
प्रिय अपने को ढूँढन''[44]

(पर्दा गिरता है)

नाटक के द्वितीय अंक का दूसर दृश्य यही पर समाप्त होता है।

अंक दूसरा - दृश्य - 3 :-

नाटक के इस दृश्य में कायस्थ और कबीर मे चले संवादों को दिखाया है। कायस्थ अकलमंद और चतुर है। वह कोतवाल को उसके कामों में मदद करनेवाला है। इसी कारण कोतवाल का संदेश पाकर वह कबीर के पास आता है और उसके साथ मीठी-मीठी बातें करता है। कबीर के कवित्त का गुणगान करता है। उसके काव्य प्रतिभा को ईश्वर प्रदत्त तथा अद्भूत बताकर उसे रिझाता है। वह कबीर से कहता है कि मैं कवि तो नहीं हूँ लेकिन कवि का दिल मैंने भी पाया है। इसलिए मैं तुम्हारी कद्र करता हूँ। लेकिन तुम्हारी भाषा गँवार है। इसलिए तुम्हें सच्ची साधना करनी चाहिए। छन्द दोष को सुधारना होगा। साथ ही साथ तुम्हें खण्डन-मण्डन नहीं करना चाहिए, यह कवि का काम नहीं हैं। कायस्थ उसे प्रलोभन देता है कि वह उसे किसी राजा या सामन्त के यहाँ राजकवि बनवा देगा और उसके घर के आगे हाथी झूलने लगेंगे। ''जब महाराज का हाथ तुम्हारी पीठ पर होगा तो अपने आप तुम्हारी प्रतिभा खिलेगी, तुम्हारा मान होगा। एक दिन तुम राजकवि भी बन सकते हो।'' कबीर को कायस्थ की बात सुनकर कुछ शंका होने लगती है। वह पूछता है कि क्या कोतवाल ने उसे उसके पास भेजा है, तो पहले तो कायस्थ बात को छिपाने की चेष्टा करता है, पर बाद में स्वीकार कर लेता है।

कायस्थ कबीर को इस बात से आगाह करते हुए कहता है कि, ''सुनो कबीरदास, दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी, यहाँ तशरीफ ला रहे हैं। बिहार की फतह के बाद वह दिल्ली लौट रहें हैं। रास्ते में काशी से होकर जायेंगे। हाकिम लोग सोचते हैं कि उन दिनों तुम्हारे यहाँ रहते झगड़ा हो सकता है।''[45] वह उसे इस बात की भी याद दिलाता है कि तुम पहले ही मुल्ला-ब्राह्मण को नाराज कर बैठे हो। उन्हें नाराज करना एक बात है, शहनशाह को नाराज करना बिल्कुल दुसरी बात है। इसलिए तुम्हें उन दिनों यहाँ सत्संग नहीं लगाना चाहिए। कबीर कायस्थ की बात नहीं मानता, वह उसे कहता है कि सत्संग तो लगेगा। उसके सामने एक के बाद एक पद भावनात्मक आवेश में कहने लगता है। वह कहता है कि,

''कबिरा खडा बजार में
लिए लुकाठी हाथ
जो घर फूँके आपना
चले हमारे साथ''[46]

नाराज होकर कायस्थ चला जाता है। इसी बीच पीपा, सेना, रैदास, बशीरा वहाँ आते हैं। कबीर उन्हें सब बातें बता देता है। इतने में वहाँ कोतवाल अपने सिपाहियों को लेकर पहुँचता है। कबीर और उसके साथियों को पकडकर ले जाता है, उन्हें हवालात में बन्द कर देता है। कोतवाल अपने दरबारियों, अधिकारियों को आदेश देता है कि बादशाह का स्वागत करने के लिए शहर के बाहर खडे हो जायें, सभी दूकानदार शाही लश्कर के लिए भोजन की सामग्री लेकर छावनी पहुँचे। जब कोतवाल को पता चलता है कि बादशाह कबीर पर मेहरबान है। उसी से मिलने के लिए काशी में पड़ाव डालेगे। तो वह कबीर के प्रति विरोध-भाव त्याग कर न केवल उसकी प्रशंसा करने लगता है, उसका गुणगान करता है। कोतवाल कहता है कि इस आदमी में कोई खुदादात ताकत है, एक खाश कशिश हैं जिससे लोग इसकी तरफ खींचे आते हैं। कोतवाल सिर्फ उसकी तारीफ नहीं करता तो अपने अधिकारी को यह भी आदेश देता है कि, ''जहाँ कबीर और उसके साथी बैठनेवाले हैं वहाँ सफाई करो और छोटी-मोटी सजावट भी करवाता है।

गुलाब केवडा भी छिडकवा देता है। अधिकारी कोतवाल से यह कहता है कि बादशाह को इस बात का पता न चले कि कबीर और उसके साथियों को हम कोडे लगाते थे। उनका जमाव तोडते थे। सहासा दूर से नगाडो, तूतियों की आवाज आने लगती है। कोतवाल सभी दरबारियों को बादशाह सलामत की अगवानी करने शहर के बाहर पहुँचने का आदेश देता है। कबीरदास के साथ पूरी मान-मर्यादा के साथ सुलूक करने के लिए कहा जाता है। कायस्थ यह सब देखकर कहता है - ''कबीरदास का कैसा सितारा चमका है! जरूर कोई पहुँचा हुआ पीर-पैगम्बर है।''[47] कोतवाल भी खुद को खुद नसीब समझता है। वरना वह कबीर के साथ कुछ गलत कर बैठता। और जाने इसका क्या हस्र होगा। कोतवाल प्रस्थान करता है और यहीं पर नाटक का दूसरा अंक समाप्त होता है।

तृतीय अंक - दृश्य - 1 :-

नाटक के इस अंक के प्रथम दृश्य में सड़क के किनारे कबीर और रैदास झाडू लगा रहे हैं। भण्डारे का आयोजन किया गया है। कबीर की पत्नी लोई और उसके सभी साथी बशीरा, सेना उसकी मदद कर रहें हैं। कबीर के पिताजी नूरा भी इस काम में हाथ बँटा रहे हैं। कबीर के पिता को इस बात की चिन्ता है कि यदि कबीर भण्डारे लगाता फिरेगा तो घर में खड्डी कौन चलायेगा? शहर में शाही लष्कर उतरा हुआ है, फौजी जो मन आये करते हैं। बशीरा कबीर को बता रहा है कि खोमचेवाला फौजियों को झपट-झपटकर पूरीयाँ और लपक-लपककर उनपर सालन डाल रहा है। लेकिन हम माँगे तो पूरी फेंकता है। कबीर बशीरा को बातों को भूला देने कहते हैं और इकतारा उठाकर सत्संग शुरू करने के लिए बैठने कहते हैं।

सत्संग के लिए बहुत बडा जमाव है। सत्संग चलने लगता है। मण्डली बड़ी तन्मयता से गीत गाने लगती है। पदों के चलते समय सुल्तान सिकन्दर लोदी अपने लश्कर के सिपाहीयों के साथ पालकी में वहाँ दाखित होते हैं। वे सत्संग को रूक जाने का हुक्म देते हैं और यहाँ क्या चल रहा है? यह पूछते हैं। कोतवाल बता देता है कि यहाँ कबीरदास का सत्संग चल रहा है। कबीरदास भी सिकन्दर लोदी से

कहते हैं कि भगवान का नाम लेते है। इस बात पर सिन्दर लोदी उसे कहता है कि "हमने तुम्हारा नाम बहुत सुना है। हमारे पीर, शेख तक्की साहिब अक्सर तुम्हारा जिक्र करते हैं।" वह कबीर से कहते है कि तुम हमारे साथ दिल्ली चलो हम तुम्हारी मुलाकात शेख तक्की साहिब से करायेंगे। सुल्तान अपने वजीर से कहते हैं कि कलाकार तो चित्र बनाता है। लेकिन उस मनुष्य के मन में समय समय पर उठने वाले भाव को कोई कलाकार ही साकार कर लेता है। कलाकार उसे रंग देता है, वह सूक्ष्म भाव साकार और सजीव होकर प्रकट हो जाता है। ऐसे चित्रों को देखकर कवि-कलाकार का भाव दर्शक का भाव बन जाता है। यही बात मूर्ति पूजा के संबंध में भी सच है। मूर्ति भगवान या खुदा नहीं है। वह पत्थर है लेकिन उसके जरीए हम भगवान को याद करतें हैं। वह केवल माध्यम है। सिकन्दर कबीर से विभिन्न सवाल करते हैं। पूछते है कि क्या तुम माँगकर खाते हो ? तुम फकीर हो क्या ? इन सवालों का जवाब कबीर देते हुए कहते हैं कि मै जुलाहा हूँ। कपडा बुनता हूँ। जब सिकन्दर लोदी हँसते हुए कबीर से कहते हैं कि तुम्हारे फटे-पुराने कपडे देखकर लगता नहीं कि तुम जुलाहा हो। तो कबीर उन्हें कहता है, "जुलाहों की यही खूबी है बादशाह सलामत, लोगों को कपडे पहनाते हैं, खुद चिथडों में घूमते है। जुलाहों को चिथडे भी नसीब हो जायें, गनीमत है।"[48] बादशाह के गले में मोतियों का हार देखकर भी वह बादशाह को अमीर खुसरो की बात बता देता है। बादशाह उसकी हाजिरजवाबी की प्रशंसा करते हैं और उसके दुस्साहस की दाद भी देते हैं। बादशाह के दूसरे प्रश्न का जवाब देते हुए कबीर कहते हैं कि मेरी फकीरी के लिए घर-बाहर छोडने की जरूरत नहीं है। इसमें जंग इबादत नहीं है। इन्सान की खिदमत करना उसे सुखी बनाना इबादत है। कबीर की बातों को सुनकर सिकन्दर चौंक जाता है और कहता है कि "तुम पहले इन्सान हो जो हमारे सामने इस तरह बोलने की जुर्अत कर रहे हो। लेकिन हम तुम्हारे साथ नरमी से पेश आयेंगे क्योंकि किसी हकीर-फकीर पर हम हाथ नहीं उठाते।"[49] बादशाह कबीर से पूछते हैं कि तेरा मजहब क्या है? इस बात पर कबीर कहते है कि मेरा मजहब इन्सान की मोहब्बत है। मैं उस खुदा की इबादत करता हूँ जो हर इन्सान के दिल में बसता है। कबीर कहते हैं कि मेरा मालिक तो मेरे दिल में बैठता है इ स पर वे एक पद भी गाते है जिसमें कहते हैं -

''इस घट अन्तर बाग बगीचे, इसी में सिरजनहारा
इस घट अन्तर सात समन्दर, इसी मैं नौ लख तारा
इस घट अन्तर पारस मोती, इसी में परखनहारा
इस घट अन्तर अनहद गरजै, इसी में उठत फुहारा
कहत कबीर सुनो भई साधों, इसी में साई हमारा।''[50]

कबीर बादशाह से यह भी कहते है कि मैंने मजहब को छोड दिया है। खुदा की जात महजब नहीं है। रोजा-नमाज मजहब है, पूजा-पाठ, व्रत-उपवास मजहब है। बादशाह के एक सवाल का जवाब देते हुए कबीर कहता है कि जन्म से सभी इन्सान होते हैं, न हिन्दू न मुसलमान। कबीर की बातों को सुनकर सुल्तान को गुस्सा आने लगता है। कोतवाल भी बादशाह को कबीर के विरुद्ध भडकाने का काम करता है। सिकन्दर फिर मजहब के बारे में पूछता है तो कबीर उसे पद के माध्यम से जवाब देता है ''एक निरंजन अल्लाह मेरा -----'' कबीर की बात सुनकर बादशाह कोतवाल को कबीर पर नजर रखने के लिए कहते हैं और गुस्से से कह उठते हैं कबीर को शहर के बाहर निकाल दो औ इन सब को यहाँ से हटा देने के लिए कहते हैं। और प्रस्थान करते हैं। कबीर जाते हुए भी कहता है कि निर्भय, निगुर्ण, गुण गाऊँगा। सभी लोग कुछ देर तक मौन खडे रहते है लेकिन फिर अनेक दिशाओं से कबीर के पदों की आवाज आने लगती हैं। यहीं नाटक समाप्त होता है और पर्दा गिरता है।

संदर्भ

1. भीष्म साहनी, ''हानूश'', तीसरा संस्करण (पुर्नमुद्रण) 1999, पृ.29
2. वही, पृ.30
3. वही, पृ.31
4. वही, पृ.32
5. वही, पृ. 34
6. वही, पृ.36
7. वही, पृ.37
8. वही, पृ.38
9. वही, पृ.40
10. वही, पृ.43,44
11. वही. पृ. 44
12. वही, पृ. 45
13. वही, पृ. 48
14. वही, पृ. 53
15. वही, पृ. 54
16. वही, पृ. 57
17. वही, पृ. 60
18. वही, पृ. 67
19. वही, पृ. 78
20. वही, पृ. 83

21. वही, पृ. 84

22. वही, पृ. 95

23. वही, पृ. 96

24. वही, पृ. 103

25. वही, पृ. 109

26. वही, पृ. 112

27. वही, पृ. 114,115

28. वही, पृ. 129

29. भीष्म साहनी, 'कबिरा खडा बजार में', चौथी आवृत्ती 2000, पृ.12

30. वही, पृ.15

31. वही, पृ.18

32. वही, पृ. 24

33. वही, पृ.35

34. वही, पृ. 39,40

35. वही, पृ.45

36. वही, पृ.46

37. वही, पृ. 50

38. वही, पृ.53

39. वही, पृ. 55

40. वही, पृ. 61

41. वही, पृ. 64

42. वही, पृ.74

43. वही, पृ. 76

44. वही, पृ. 77

45. वही, पृ. 81, 82

46. वही, पृ. 82

47. वही, पृ. 87

48. वही, पृ. 93

49. वही, पृ. 95

50. वही, पृ. 95